سب دھرم مذھبوں کی ایکتا-

सब धर्म-मज़हबों की एकता ।



भगवानदास

دلا طواف دلاں کن کہ کعبہ مخفیست
کہ آں خلیل بنا کرد و ایں خدا خود ساخت

दिला! तवाफ़ि-दिलां कुन् कि काबए-मख़्फ़ीस्त ।
कि आँ ख़लील् बिना कर्द व ईं ख़ुदा ख़ुद साख़्त ॥

اے دل — دلوں کی پرکرما کر کہ انسان کا دل (هردی) چھپا ہوا کعبہ ہے - اس کعبہ کو خلیل نے بنایا - مگر اِس کو تو خود خدا نے بنایا ہے *

ऐ दिल! दिलों की परिक्रमा कर, कि इन्सान का दिल (हृदय) छिपा हुआ काबा है। उस काबे को ख़लील ने बनाया, मगर इसको तो ख़ुद ख़ुदा ने बनाया है ॥

दीबाचा (भूमिका)

बनारसमें तारीख १३-१४-१५ अक्टूबर सन् १९२३ को संयुक्तप्रान्त (मुमालिक मुत्तहिदा) की राजनीतिक कान्फ़रेन्स हुई। स्वागत-समिति (कमेटी इस्तिक़बालिया) के सभापतिकी हैसियतसे श्रीभगवान्दासने ख़ुतबा (व्याख्यान) किया। सब धर्मों मजहबों की असली एकता के बारेमें जो उन्होंने कहा वह कलकत्ते के मशहूर दरियादिल दानी रईस सेठ घनश्यामदासजी बीड़ला को इस देसके बाशिंदोंके लिये इतना मुफ़ीद (गुणकारी) मालूम हुआ कि उन्होंने यह इरादा (निश्चय) किया कि इसकी कई हजार कापी छाप कर चारो तरफ़ बांटी जायं। उसी इरादेके मुताबिक (अनुसार) यह मजमून (वक्तव्य) देसकी खिदमत में पेश किया जाता है। स्पीचमेंसे कुछ थोड़ा मजमून जो और बातोंके मुताल्लिक (सम्बन्ध में) था वह छोड़ दिया गया है।

व्यवस्थापक (मुन्तज़िम)

ज्ञानमण्डल छापाख़ाना, बनारस।

دیباچہ (بھومکا)

بنارس میں تاریخ ۱۳-۱۴-۱۵ اکتوبر سنہ ۱۹۲۳ء کو سنجکت پرانت ممالک متحدہ) کی راج نیتک کانفرنس ہوئی — سواگت سمتی (کمیٹی استقبالیہ) کے سبھاپتی کی حیثیت سے شری بھگوان داس نے خطبہ (ویاکھیان) کیا — سب دھرموں مذہبوں کی اصلی ایکتا کے بارے میں جو اُنہوں نے کہا وہ کلکتہ کے مشہور دریا دل دانی رئیس سیٹھہ گھنشیام داس جی برلا کو اس دیس کے باشندوں کے لئے اِتنا مفید(گن کاری) معلوم ہوا کہ اُنہوں نے یہہ اِرادہ (نشچے) کیا کہ اسکی کئی ہزار کاپی چھاپ کر چارو طرف بانٹی جائیں- اُسی اِرادہ کے مطابق (انوسار) یہہ مضمون (وکتویہ) دیس کی خدمت میں پیش کیا جاتا ہے - اسمیں میں سے کچھہ تھوڑا مضمون جو اور باتوں کے متعلق (سمبندھ میں) تھا وہ چھوڑ دیا گیا ہے ●

ویوستھاپک (منتظم)

گیان منڈل چھاپہ خانہ بنارس

ॐ परमात्मने नमः।

बिस्मिल्लाह अर्‌रहमान् अर्‌रहीम।

स्पेशल कांग्रेसके आगे दो झगड़े।

......१५-१९ सितम्बर, १९२३ की दिल्लीकी स्पेशल कांग्रेस कौंसिलके झगड़ेका निपटारा करनेके लिये बुलाई गई। पर वह बैठने न पाई थी कि एक और ऐसा झगड़ा देसमें नये सिरसे उठा, यानी मजहबी झगड़ा, जिसके आगे कौंसिलोंका झगड़ा बच्चोंका खेल हो गया; और सारा काम कांग्रेसका, जो उस छोटे झगड़ेसे रुक रहा था, इस बड़े झगड़ेसे बिलकुल बन्द ही हो गया। इस लिये दिल्लीकी कांग्रेसके आगे बजाय एकके दो भारी मसले आ पड़े। दोनो बातों पर उसने समझौता कर दिया। कौंसिलकी बात मजहबी झगड़ोंकी बातके मुकाबिले कम जरूरी है। इसलिये थोड़ेमें मैं उसकी चर्चा पहिले कर देता हूँ।

मजहबी झगड़ा।

अब मैं दूसरे और भारी झगड़ेका जिकर करूंगा। खद्दर, शांति, अछूतोद्धार, मजहबी एका, ये चार चीजें स्वराजकी जड़ बुनियाद हैं—ऐसा महात्माजी बराबर कहते रहे। खद्दरके मानी रोजगारी स्वराज, अछूतोद्धारके मानी मुहब्बत और इंसानियतका झूठे अहंकार और झूठी पवित्रताके ऊपर स्वराज, शांतिके मानी अक़्लका हाथ पैर पर स्वराज, मजहबी एकाके मानी दिलकी नेकनीयतीका बदनीयतीके ऊपर स्वराज। जितना जांच कीजिये उतना ही निश्चय मालूम होगा कि मजहबी एका होना, मजहबी झगड़ोंका मिटना, यह दूसरी सब भलाइयोंकी जड़ बुनियाद है।

اوم - پرماتمنے نمہ

بسم الله الرحمان الرحیم

اسپیشل کانگریس کے آگے دو جھگڑے

.........۱۵-۱۹ استمبر سنہ ۱۹۲۳ء کی دھلی کی اسپیشل کانگریس کونسل کے جھگڑے کا نیٹارا کرنے کے لئے بلائی گئی - پر وہ بیٹھنے نہ پائی تھی کہ ایک اور ایسا جھگڑا دیس میں نئے سر سے اُٹھا - یعنی مذھبی جھگڑا جسکے آگے کونسلوں کا جھگڑا بچوں کا کھیل ھو گیا اور سارا کام کانگریس کا جو اُس چھوٹے جھگڑے سے رک گیا تھا اس بڑے جھگڑے سے بالکل بند ھی ھو گیا - اس لئے دھلی کانگریس کے آگے بجائے ایک کے دو بھاری مسئلے آ پڑے - دونوں باتوں پر اس نے سمجھوتا کر دیا - کونسل کی بات مذھبی جھگڑوں کی بات کے مقابلے کم ضروری ھے - اس لئے تھوڑے میں میں اُسکی چرچا پہلے کر دیتا ھوں * * * *

مذھبی جھگڑا

اب میں دوسرے اور بھاری جھگڑے کا ذکر کرونگا - کھدر شانتی اچھوت اُدھار مذھبی ایکا یہہ چار چیزیں سوراج کی جڑ بنیاد ھیں - ایسا مہاتما جی برابر کہتے رھے - کھدر کے معنی روزگاری سوراج - اچھوت اُدھار کے معنی محبت اور انسانیت کا جھوٹھے اھنکار اور جھوٹھی پوترتا کے اوپر سوراج - شانتی کے معنی عقل کا ھاتھہ پیر پر سوراج - مذھبی ایکا کے معنی دل کی نیک نیتی کا بد نیتی کے اوپر سوراج — جتنا جانچ کیجئے اُتناھی نشچے معلوم ھوگا کہ مذھبی ایکا ھونا مذھبی جھگڑوں کا مٹنا - یہہ دوسری سب بھلائیوں کی جڑ بنیاد ھے *

हर आदमी अच्छी तरह जानता है, और हर आदमी मुंहसे कहता भी है, कि जब तक ये आपसके मजहबी झगड़े जारी रहेंगे तबतक स्वराज नहीं ही मिल सकता। पर कुछ ऐसी माया है कि यह सब जानते, मानते, बखानते हुए भी लोग धर्म मजहबके नामसे एक दूसरेका काम बिगाड़नेका जतन करते ही हैं। और अपना भी काम बिगाड़ते ही हैं।

इस फ़सादका मूल कारण यानी असली वजह।

इस झगड़ेकी जो सूरत इधर हुई है, जो बड़े बड़े फसाद कई बड़े शहरों और कसबोंमें हुए हैं, उनको यहां बखाननेकी जरूरत नहीं है। शुक्र (धन्यवाद) का मुकाम (अवसर) है कि दिल्लीकी स्पेशल कांग्रेसके बाद कोई नये फसाद नहीं सुने गये हैं, वहांके समझौतेका कुछ असर देसमें हुआ, ऐसा मालूम होता है। खास-कर उस घोषणा (एलान्) का जो दोनों मजहबोंके एक सौ मजहबी तथा राजनीतिक नेताओंके दस्तखतसे मिल कर हुआ। और वह समझौता हर तरहसे गनीमत है। पर उसको स्थिर (मुस्तहकम) करनेके लिये, उसकी जड़ मजबूत करनेके लिये, उसको कायम रखनेके लिये, कुछ और कामकी भी जरूरत है। और मैं दिलसे आशा करता हूं कि वह काम इस कान्फ़रेन्समें शुरू कर दिया जायगा। मैंने गया की कांग्रेसमें उसको पेश करनेकी कोशिश की थी। और मुझे यक़ीन है कि अगर वहां यह काम शुरू कर दिया जाता तो इन फसादोंकी नौबत न आती। दिल्लीमें भी मैंने नेताओंका ध्यान इस ओर दिलाया, और आपसे भी वही अरज करता हूं।

ہر آدمی اچھی طرح جانتا ہے بلکہ ہر آدمی منہہ سے کہتا بھی ہے کہ جب تک یہہ آپس کے مذہبی جھگڑے جاری رہینگے تب تک سوراج نہیں ہی مل سکتا - پر کچھہ ایسی مایا ہے کہ سب جانتے ماتنے بکھانتے ہوئے بھی لوگ دھرم مذہب کے نام سے ایک دوسرے کا کام بگاڑنے کا جتن کرتے ہی ہیں اور اپنا بھی کام بگاڑتے ہی ہیں •

اس فساد کا مول کارن یعنی اصلی وجہ

اس جھگڑے کی جو صورت اُبھر ہوئی ہے جو بڑے بڑے فساد کئی بڑے شہروں اور قصبوں میں ہوئے ہیں اُنکو یہاں بکھاننے کی ضرورت نہیں ہے—شکر (دھنیواد) کا مقام (اوسر) ہے کہ دھلی کی اسپیشل کانگریس کے بعد کوئی نئے فساد نہیں سنے گئے ہیں - وہاں کے سمجھوتے کا کچھہ اثر دیش میں ہوا ایسا معلوم ہوتا ہے - خاص کر اُس گھوشنا (اعلان) کا جو دونوں مذہبوں کے ایک سو مذہبی تتھا راج نیتک نیتاؤں کے دستخط سے ملکر ہوا - اور وہ سمجھوتا ہر طرح سے غنیمت ہے - پر اُسکو استھر (مستحکم) کرنے کے لئے اُسکی جڑ مضبوط کرنے کے لئے اُسکو قائم رکھنے کے لئے کچھہ اور کام کی بھی ضرورت ہے - اور میں دل سے آشا کرتا ہوں کہ وہ کام اس کانفرنس میں شروع کر دیا جائیگا - میں نے گیا کی کانگریس میں اُس کو پیش کرنے کی کوشش کی تھی اور مجھے یقین ہے کہ اگر وہاں یہہ کام شروع کردیا جاتا تو ان فسادوں کی نوبت نہ آتی - دھلی میں بھی میں نے نیتاؤں کا دھیان اس طرف دلایا - اور آپ سے بھی وِنے عرض کرتا ہوں •

स्वराज शब्दके अर्थमें भूल ।

स्वराजके मीठे लफ़्ज़के पीछे सब लोग मिलकर दौड़े। स्वराजकी ठीक ठीक शकल सूरत पहिचाननेकी कोशिश नहीं की। उमेद की थी कि थोड़ी मिहनतसे बड़ी चीज़ थोड़े वक्तमें मिल जायगी। जब नहीं मिली तो हमलोग एक दूसरेको इल्ज़ाम देने लगे, और आपसमें लड़ने लगे। हमेशाका दस्तूर है कि जब काम नहीं बनता तो काम करनेवाले एक दूसरेको दोष देने लगते हैं। जैसा नीति जाननेवालों ने कहा है, "यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखर-स्तत्र हन्यते"। इस लड़ाईकी दो सूरतें हुई। जो शाइस्ता पढ़े लिखे लोग थे उनमें तो सत्याग्रह और कौंसिलके मसलोंपर काग़ज़ी और ज़बानी लड़ाई शुरू हुई। और यह लड़ाई जब ज्यादा बढ़ी, तब दूसरे दलों (गरोहों) में, जिन्होंने भीतर भीतर यह समझ रखा था कि स्वराजके मानी हमारे ही मजहबवालोंका राज, वह बिगड़ा हुआ स्वराजका जोश एक दूसरेकी हाथापाई, मारपीट, और लूटपाटमें उबल पड़ा।

धर्म मज़हब के मानीमें भूल ।

इसकी ख़ास वजह यह है कि जैसा हम लोगोंने स्वराजका मतलब नहीं समझा है वैसा ही मजहब धर्मकी भी असल शकल नहीं पहिचानते हैं। अब तक हमलोग एक दूसरोंको यही कहते आये कि लड़ो मत, लड़ो मत, मेल करो, मेल करो, नहीं तो स्व-राज नहीं पाओगे। इस तरह स्वराजकी मिठाईकी लालचसे ही जो मेल किया जायगा वह कबतक ठहर सकेगा ? जब तक मज-हबोंका मेल नहीं किया जायगा, उनके सिद्धांतो (उसूलों) का

سوراج شبد کے ارتھہ میں بھول

سوراج کے میٹھے لفظ کے پیچھے سب لوگ ملکر دوڑے - سوراج کی ٹھیک ٹھیک شکل صورت پہچاننے کی کوشش نہیں کی - اُمید کی تھی کہ تھوڑی محنت سے بڑی چیز تھوڑے وقت میں ملجاویگی — جب نہیں ملی تو ہم لوگ ایک دوسرے کو الزام دینے لگے اور آپس میں لڑنے لگے ہمیشہ کا دستور ہے کہ جب کام نہیں بنتا تو کام کرنیوالے ایک دوسرے کو دوش دینے لگتے ہیں - جیسا کہ نیتی جاننے والوں نے کہا ہے *

بدھی کاریہ وپتہ سیان مکھرستتر ھنیتے

اس لڑائی کی دو صورتیں ہوئیں - جو شایستہ پڑھے لکھے لوگ تھے اُن میں تو ستیاگرہ اور کونسل کے مسلوں پر کاغذی اور زبانی لڑائی شروع ہوئی- اور یہ لڑائی جب زیادہ بڑھی تب دوسرے دلوں (گروہوں) میں جنہوں نے بہیتر بہیتر یہہ سمجھہ رکھا تھا کہ سوراج کے معنی ہمارے ہی مذہب والوں کا راج وہ بگڑا ہوا سوراج کا جوش ایک دوسرے کی ہاتھا پائی مارپیٹ اور لوٹ پاٹ میں اُبل پڑا *

دھرم مذھب کے معنی میں بھول

اسکی خاص وجہہ یہ ہے کہ جیسا ہم لوگوں نے سوراج کا مطلب نہیں سمجھا ہے ویسا ہی مذہب دھرم کی بھی اصل شکل نہیں پہچانتے ہیں - اب تک ہم لوگ ایک دوسرے کو یہی کہتے آے کہ لڑو مت لڑو مت میل کرو میل کرو نہیں تو سوراج نہیں پاؤگے - اسیطرح سوراج کی مٹھا ئی کی لالچ سے ہی جو میل کیا جاویگا وہ کب تک ٹھہر سکیگا ؟ جب تک مذہبوں کا میل نہیں کیا جاویگا اُن کے سدھانتوں (اُصولوں) کا

एका सबको न दिखाया जायगा, तब तक मज़हब वालोंका भी सच्चा मेल कभी नहीं होगा। और जब तक स्वराजकी सच्ची शकल सबको नहीं बताई जायगी और उसका तसफ़ीया समझौता नहीं कर लिया जायगा तब तक मज़हबवालों धर्मवालों में और गरोह गरोहमें, हिन्दुस्तानी यूरोपीयनमें, हिंदू-मुसल्मानमें, ज़मींदार काश्तकारमें, दूकानदार ख़रीदारमें, ज़ाताज़ातमे, रोज़गार रोज़गारमें, अहल्कार ग़ैरअहल्कारमें, हमेशा आपसमें बेएतबारी अविश्वास बना रहैगा, और दिली मेल और एकासे स्वराजके लिये कोशिश न की जायगी, बल्कि खुले तौर से या छिपे तौरसे एक दूसरेका काम रोका जायगा, और जो कुछ एका और मेल होगा वह सिर्फ़ ऊपरी, दिखनावती, बनावटी और चंदरोज़ा होगा। लेकिन धर्म मज़हब की असलियत पहिचाननेसे सब धर्मों मज़हबों का मेल ही मेल देख पड़ैगा। और स्व-राज में "स्व" की अस्ली सच्ची सूरत पहिचानने से धर्म-मज़हब की भी अस्लियत मालूम हो जायगी, और मज़हबी झगड़े भी मिट जायंगे, और सियासी तफ़र्के, राजनीतिक झगड़े, और गरोह गरोहके आपसके शक शुबहे भी रफ़ा हो जायंगे, जिन्ही शक शुबहों की वजहसे हमारी स्वराज की लड़ाई रुक रही है, क्योंकि इस वक़्त हर एक आदमी या गरोह स्वराजका अर्थ अपने मनमाना लगा रहा है, और भीतर भीतर समझता है कि स्वराज होने पर हम दूसरोंको दबावैंगे, या डरता है कि दूसरे हमको दबावैंगे, और इसी लिये सच्चे दिलसे काममें मदद नहीं देता, गो मुंहसे सबके सब अहल्कार और यूरोपियन भी कहते और कबूलते हैं कि हिन्दुस्तानको स्वराज्य मिलना ही चाहिये।

मतलबी यारी और अस्ली यारी।

मतलबकी यारी मतलबके साथ बनेगी और बिगड़ेगी, बल्कि यह

ایکتا سب کو نہ دکھایا جاویگا تب تک مذھب والوں کا بھی سچا میل کبھی نہیں ھوگا — اور جب تک سوراج کی سچی شکل سب کو نہیں بتائی جائیگی اور اوسکا تصفیہ سمجھوتا نہیں کر لیا جائیگا تب تک مذھب والوں دھرم والوں میں اور گروہ گروہ میں - ھندوستانی یوروپین میں - ھندو مسلمان میں - زمیندار کاشتکار میں - دوکاندار خریدار میں ذات ذات میں - روزگار روزگار میں - اھلکار غیر اھلکار میں - ھمیشہ آپس میں بے اعتباری اوشواس بنا رھیگا - اور دلی میل اور ایکا سے سوراج کے لئے کوشش نہ کیجائیگی - بلکہ کھلے طور سے یا چھپے طور سے ایک دوسرے کا کام روکا جائیگا - اور جو کچھہ ایکا اور میل ھوگا وہ صرف اوپری دکھاوٹی بناوٹی اور چند روزہ ھوگا - لیکن دھرم مذھب کی اصلیت پہچاننے سے سب دھرموں مذھبوں کا میل ھی میل دیکھہ پڑیگا — اور سوراج میں "سو" کی اصلی سچی صورت پہچاننے سے دھرم - مذھب کی بھی اصلیت معلوم ھو جائیگی - اور مذھبی جھگڑے بھی مٹ جائینگے - اور سیاسی تفرقے راج ٹیکنک جھگڑے اور گروہ گروہ کے آپس کے شک شبہہ بھی رفع ھو جائینگے - جنہیں شک شبہوں کی وجہہ سے ھماری سوراج کی لڑائی رک رھی ھے - کیونکہ اسوقت ھر ایک آدمی یا گروہ سوراج کا ارتھہ اپنے من مانا لگا رھا ھے - اور بہیتر بہیتر سمجھتا ھے - کہ سوراج ھونے پر ھم دوسروں کو دباوینگے - یا ڈرتا ھے کہ دوسرے ھم کو دباوینگے - اور اسی لئے سچے دل سے کام میں مدد نہیں دیتا - گو منہہ سے سب کے سب اھلکار اور یوروپین بھی کہتے اور لیولتے ھیں کہ ھندوستان کو سوراج ملنا ھی چاھئے *

مطلبي یاری اور اصلي یاري

مطلب کی یاری مطلب کے ساتھہ بنیگی اور بگڑیگی — بلکہ پہلے

कहना चाहिये कि उसमें सदाक़त, सत्यता, निश्छलता नहीं हो सकती, इसलिये मतलब को भी बिगाड़ेगी और आप भी बिगड़ैगी ही, बनेगी नहीं। बहुत मोटी बात है, एक ही रोटी अगर आपका भी और हमारा भी लक्ष्य (मक़सद) है, तो तीसरेसे छीननेके लिये तो ज़रूर हम आप मेल कर लें, पर छीन लेनेके बाद क्या हालत होगी ? आप खाओगे या हम खायंगे ? इसपर तो फिर हमारे आपके बीच लाठी चलैगी ? यूरुपकी हालत आंखके सामने है। जर्मनीको हराने तक बड़ा मेल था, अब घूराघूरी है। इस लिये रोटी किस चीजको कहते हैं और उसका कैसे आपसमें बटवारा होगा, स्वराजकी क्या शकल होगी, कि जिस से किसी गरोह की भी रोटी एक बारगी और सबकी सब न मारी जायगी, यह पहिलेसे ही समझ लेना जरूरी है। और इसी समझनेके लिये मतलबकी यारी छोड़कर अस्ली यारी पकड़ना चाहिये। और स्वराज मिले या न मिले, सब मजहबोंके माननेवालोंमें आपसमें मेल इस वास्ते होना चाहिये कि सब धर्मों, सब मजहबों, के अस्ली उसूल एक हैं। खुदा परमात्मा एक है, उसीने सब इन्सानोंको बनाया है, और सब इन्सानोंके दिल में बैठा हुआ है, सिर्फ खुदीके पर्देने उस खुदाको हमसे छिपा रक्खा है, स्वार्थ ने परमार्थ को ढांक दिया है, जो फर्क और भेद है वह केवल नामोंका ही है। जब हम सब ऐसा समझेंगे, और समझावैंगे, तभी सच्ची यारी होगी, और तभी स्वराज वगैरह सभी नेमतैं सहजमें मिल जायँगी।

जैसा ईसाने कहा है, "पहिले नेकदिली हासिल करो, उस्के बाद और सब चीजैं तुम्हें आप मिल जायंगी"।

کہنا چاھئے کہ اُس میں صداقت - ستیتا - نشچھلتا نہیں ھو سکتی —
اسلئے مطلب کو بھي بگاڑیگي — اور آپ بھي بگڑیگي ھي بنیگي نہیں —
بہت موتي بات ھے — ایک ھي روتي اگر آپکا بھي اور ھمارا بھی لکش
(مقصد) ھے تو تیسرے سے چھیننے کے لئے تو ضرور ھم آپ میل کر لینگے
پر چھین لینے کے بعد کیا حالت ھوگي ؟ آپ کھاؤگے یا ھم کھائینگے ؟
اس پر تو پھر ھمارے آپ کے بیچ لاٹھي چلیگي ؟ یوروپ کي حالت
آنکھہ کے سامنے ھے — جرمنی کو ھرانے تک بڑا میل تھا — اب
گھورا گھوري ھے — اسلئے روتي نس چیز کو کہتے ھیں اور اُسکا کیسے
آپس میں بٹوارہ ھوگا - سوراج کي کیا شکل ھوگي کہ جس سے
کسي گروہ کي بھي روتي ایک بارگي اور سب کي سب نہ ماري جائیگي -
یہ پہلے سے ھی سمجھہ لینا ضروري ھے — اور اسي سمجھنے کے لئے مطلب
کی یاري چھوڑکر اصلي یاري پکڑنا چاھئے — اور سوراج ملے یا نہ ملے -
سب مذھبوں کے ماننے والوں میں آپس میں میل اسواسطے ھونا چاھئے
کہ سب دھرموں - سب مذھبوں کے اصلي اُصول ایک ھیں — خدا پرماتما
ایک ھے - اُسي نے سب انسانوں کو بنایا ھے اور سب انسانوں کے دل
میں بیٹھا ھوا ھے — صرف خودي کے پردے نے اُس خدا کو ھم سے چھپا
رکھا ھے - سوارتھہ نے پرمارتھہ کو ڈھانک دیا ھے — جو فرق اور
بھید ھے وہ کیول ناموں ھي کا ھے — جب ھم سب ایسا سمجھینگے اور
سمجھاوینگے تبھي سچی یاري ھوگي اور تبھی سوراج وغیرہ سبھي نعمتیں
ھمیں ملجائینگي ٭

جیسا عیسا نے کہا ھے - "پہلے نیک دلي حاصل کرو - اسکے بعد اور
سب چیزوں تمہیں آپ مل جائینگی" ٭

सब धर्मों के उसूल एक हैं।

सूफियोंने कहा ही है,

फ़कत तफावत है नाम ही का दर अस्ल सब एक ही हैं यारो।
जो आबि-साफी कि मौजमें है उसी का जल्वा हबाबमें है॥

(केवल नामका भेद है, अस्लमें सब एक हैं। जो ही पानी समुद्रकी लहरमें है वही बबूलेमें भी चमकता है।)

मौलाना रूमने कहीं एक कहानी कही है। एक अरबी, एक ईरानी, एक तुर्कीका सफरमें साथ हो गया—चलते चलते भूख लगी, जितने पास पैसे थे इकट्ठा किये। क्या खरीदना चाहिये? अरबीने कहा एनब खरीदना चाहिये, तुर्कीने कहा बदक, ईरानीने कहा अंगूर। हुज्जत शुरू हुई। मारामारीकी नौबत आगई। एक मेवाफरोश दौरा लिये उधरसे निकला। उसने हुज्जत सुनी। बोला, लड़ो मत, मेरे पास तीनोंके पसन्दकी चीजें हैं, जो जिसको चाहे ले लो। दौरा आगे रक्खा। उसमें एक ही किस्मका फल था, मगर तीनोंने खुश होकर एक एक झुप्पा उठा लिया। क्या बात हुई? अंगूर ही को अरबीमें एनब कहते हैं, तुर्कीमें बदक़, फ़ारसीमें अंगूर, शायद पहलवीमें दाख़ कहते हैं, और संस्कृतमें द्राक्षा। इस छोटी हिकायतमें सब धर्मों और मजहबोंका सत-सार दिखा दिया है—"फ़कत तफावत है नाम ही का दर अस्ल सब एक ही हैं यारो"। खुदा बड़ा मेवाफरोश है, उसको सबका भला मन्जूर है, सबको मेवा देना चाहता है, सबकी बोली समझता है, सबके दिलमें बैठा है, पर अगर हमको खुदाके

سب دھرموں کے اصول ایک ھیں

صوفیوں نے کہا ھی ھے —

فقط تفاوت ھے نام ھي کا
در اصل سب ایک ھی ھین یارو
جو آب صافی که موج میں ھے
اُسي کا جلوہ حباب میں ھے۔

(کیول نام کا بھید ھے - اصل میں سب ایک ھیں - جو ھي پانی سمندر کي لہر میں ھے وھي بلبلے میں بھي چمکتا ھے *)

مولانا روم نے کہیں ایک کہاني کہي ھے کہ ایک عربي - ایک ایراني اور ایک ترکی کا سفر میں ساتھ ھوگیا — چلتے چلتے بھوک لگي - جتنے پاس پیسے تھے اکٹھا کئے — کیا خریدنا چاھئے ؟ عربی نے کہا عنب خریدنا چاھئے - ترکي نے کہا بدک - ایرانی نے کہا انگور — حجت شروع ھوئی — مارا ماری کي نوبت آگئي — ایک میوہ فروش دورا لئے اُدھر سے نکلا — اُسنے حجت سني بولا لڑو مت — میرے پاس تینوں کے پسند کي چیزیں ھیں — جو جسکو چاھے لے لو — دورا آگے رکھا — اُس میں ایک ھي قسم کا پھل تھا - مگر تینوں نے خوش ھو کر ایک ایک جھپا اُٹھا لیا — کیا بات ھوئی ؟ انگور ھی کو عربي میں عنب کہتے ھیں - ترکي میں بدک - فارسي میں انگور - شاید پہلوي میں داخ کہتے ھیں اور سنسکرت میں دراکشا - اس چھوٹي حکایت میں سب دھرموں اور مذھبوں کا ست سار دکھادیا ھے —" فقط تفاوت ھے نام ھی کا — در اصل سب ایک ھي ھیں یارو " — خدا بڑا میوہ فروش ھے - اُسکو سب کا بھلا منظور ھے - سب کو میوہ دینا چاھتا ھے - سب کي بوتي سمجھتا ھے سب کے دل میں بیٹھا ھے - پر اگر ھمکو خدا کے

मजहबकी परवा नहीं, "हमारा मजहब" "हमारा मजहब" इसीका हमहमा (अहमहमिका) है, तो मेवे तो मिलेंगे नहीं, सिर ही टूटेंगे।

अल्ला-परमात्मा, खुदेश्वर, एक है। नाम हीं बहुत हैं।

आप यकीन मानिये, जो खुदा आपके और मेरे दिलमें बैठा है, उससे मैंने भी बहुत बार पूछा, और आप भी जब चाहिये पूछ सकते हैं, वह यही जवाब देता है और देगा कि मैं अरबी भी समझता हूं, संस्कृत भी, और अगरेजी, फारसी, ज़िन्द, हिंदुस्तानी, चीनी, जापानी, नई, पुरानी, सभी जबानोंको जानता समझता हूं—मैंही ने तो उन्हें भी और तुम्हें भी बनाया है, चाहे जिस जबानमें मेरा नाम लो, मुझे याद करो, मुझे पहिचानो, मुझसे दुआ मांगो मैं तुम्हारी नेक ख़ाहिशें पूरी करूंगा। लेकिन अगर हम इस हमहमेंमें पड़ें कि जो मेरे मुंहसे निकले वही सब लोग कहें, मेरी ही नकल सब करें, मेरा ही मजहब फैले, तो दूसरे भी ऐसा ही झूठा और थोथा हठ क्रोध करेंगे और जो गढ़े हम दूसरोंके लिये खोदेंगे उनमें हम खुद गिरेंगे, जो ज़हर दूसरोंके लिये बोवेंगे उससे खुद मरेंगे।

इसलिये भाइयो, दोस्तो, अगर हम लोग मतलबी नहीं बल्कि सच्ची दोस्ती चाहते हैं तो,

ऐ ब चश्मानि दिल् मबीं जुज़् दोस्त,
हर् चि बीनी बिदाँ कि मज़्हरि ऊस्त।

अर्थात्, दिलकी आंखसे सबको दोस्त ही दोस्त देखो, जो कुछ देखो उस्को उसी अल्ला-परमात्माका रूप जानो।

مذهب کی پرواہ نہیں - "همارا مذهب"-" همارا مذهب" اسی کا همهه (اهمهکا) هے تو میرے تو ملینگے نہیں سر هی توتینگے *

الله پرماتما - خدیشور ایک هے
نام هی بهت هین-

آپ یقین مانئے - جو خدا آپ کے اور میرے دل مین بیٹھا هے اُس سے مین نے بھی بہت بار پوچھا اور آپ بھی جب چاهئے پوچھہ سکتے هین—وہ یہی جواب دیتا هے اور دیگا کہ مین عربی بھی، سمجھتا هون - سنسکرت بھی اور انگریزی - فارسی - ژند - هندوستانی - چینی - جاپانی نئی پرانی - سبھی زبانون کو جانتا سمجھتا هون - مین هی نے تو اُنهین بھی اور تمهین بھی بنایا هے - چاهے جس زبان مین میرا نام لو - مجھے یاد کرو - مجھے پہچانو - مجھہ سے دعا مانگو - مین تمهاری نیک خواهشین پوری کرونگا—لیکن اگر هم اس جھگڑے مین پڑین کہ جو میرے منهہ سے نکلے وهی سب لوگ کہین - میری هی نقل سب کرین - میرا هی مذهب پھیلے - تو دوسرے بھی ایسا هی جھوٹا اور تھوتھا هٹ اور کرودھ کرینگے - اور جو گڑھے هم دوسرون کے لئے کھودینگے اُن مین هم خود گرینگے - جو زهر دوسرون کے لئے بوئینگے اُس سے خود مرینگے *

اسلئے بھائیو دوستو اگر هم لوگ مطلبی نہین بلکہ سچی دوستی چاهتے هین تو-

اے بچشمان دل مبین جز دوست
هرچہ بینی بدان کہ مظهر اوست

ارتهات دل کی آنکھہ سے سب کو دوست هی دوست دیکھو جو کچھہ هو اُسکو اُسی اللہ پرماتما کا روپ جانو *

यही अर्थ संस्कृत लफ्ज़ोंमें वेदोंमें कहा है,

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥

यानी जो कोई सब चीजोंको आत्मामें और आत्माको सब चीजोंमें देखता है, वह फिर किसीसे जुगुप्सा (नफ़रत) नहीं करता।

यही अर्थ अरबी शब्दोंमें सूफ़ियोंने कहा है,

मन् अरफ़ा नफ्सहू फ़क़द् अरफ़ा रब्बहू ।

यानी जिसने अपनेको पहिचाना उसने ब्रह्म-रब्बको पहिचाना। इसी अर्थको- कुरानमें दूसरे लफ्ज़ोंमें कहा है, "नसुल्लाहा फ़अन्-साहुम् अन्फुसहुम्", यानी जो अल्ला-परमेश्वरको भूले वे अपनी नफ़्स अपनी आत्माको भूले ।

कुरानमें कहा है,

अल्ला हो बि कुल्ले शयीन् मुहीत् । यानी अल्ला सब चीजोंको घेरे है ।

वेद-उपनिषत्में ठीक यही कहा है, ब्रह्म. . .सर्वमावृत्य तिष्ठति ।

कुरान कहता है, अल्लाहो नूरुसमावाती वल् अर्द । यानी खुदाके नूरसे आस्मान और जमीन रौशन है, या खुदा ही आस्मान और जमीनकी रौशनी है, रूह है, चेतना है ।

ठीक यही मजमून वेद भी कहता है, तमेव भांतमनु भाति सर्वं तस्यैव भासा सर्वमिदं विभाति ।

कुरानकी आयत है, हुवल् अव्वल् हुवल् आखि हुवज् जाहिर् हुवल बातिन् व हुवा अला कुल्ले शयीन् क़दीर । ठीक यही अर्थ गीताके श्लोकका है ।

अहमात्मा गुड़ाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामंत एव च ॥

یہی ارتھہ سنسکرت لفظوں میں ویدوں میں کہا ہے -

یستہ سروان بھوتان آتمنیوا نپشیتی
سرو بھوتیشہ چاتمانم تتو نہ وجگپستے -

یعني جو کوئي سب چیزوں کو آتما میں اور آتما کو سب چیزوں میں دیکھتا ہے وہ پھر کسی سے جگپسا (نفرت) نہیں کرتا *

یہي ارتھہ عربي شبدوں میں صوفیوں نے کہا ہے -

من عرف نفسہ فقد عرف ربہ -

یعني جسنے اپنے کو پہچانا اُسنے برھم رب کو پہچانا - اسي ارتھہ کو قرآن میں دوسرے لفظوں میں کہا ہے -" نسوا اللہ فانسھم انفسھم "- یعني جو اللہ - پرمیشور کو بھولے وہ اپني نفس اپني آتما کو بھولے *

قرآن میں کہا ہے - " اللہ بکل شئی محیطا" یعني اللہ سب چیزوں کو گھیرے ہے *

وید اپنشد میں ٹھیک یہي کہا ہے—" برھم سروما ورتیہ تشٹھتي "-

قرآن کہتا ہے—" اللہ نورالسموات و الارض " یعني خدا کے نور سے آسمان اور زمین روشن ہے - یا خدا ھي آسمان و زمین کي روشني ہے- روح ہے - جیوتا ہے *

ٹھیک یہي مضمون وید بھی کہتا ہے —

تمیو بھانتمنو بھاتي سروم تسیئو بھاسا سرومدم وبھاتي *

قرآن کي آیت ہے —" ھوالاول والآخر والظاھر والباطن و ھو علی کل شئی قدیر" - ٹھیک یہي ارتھہ گیتا کے شلوک کا ہے —

اھماتما گڈاکیش سرو بھوتا شیہ سٹھتہ
اھمادشچہ مدھینچہ بھوتا نا منت ایوچہ *

इञ्जीलमें भी यही कहा है "गाड इज् दी आल्फा एंड् दी ओमेगा"। यानी परमात्मा-खुदा-गाड आदि-अव्वल है, अन्त-आखिर है, मध्य-बीच है, हमारे बाहर भी है, हमारे भीतर भी (चेतना, होश, जान, की शकलसे) है।

"ला इलाह इल् अल्ला" इस कलमेका अर्थ पहुंचे हुए, रसीदा, (ऋच्छतीति ऋषिः) सूफियोंने यही किया है कि "ला मौजूदा इल्ला अल्लाहु", यानी है नहीं कोई चीज सिवा उस खुदाके। कुरानमें फिर फिर कहा है, "हुवल् हय्यो ला इलाहा इल्ला हू" "ला इलाहा इल्ला अना" वगैरा, यानी वही आत्मा ही जिन्दा है क्योंकि कोई है ही नहीं सिवा उसके, नहीं कोई मौजूद है सिवा मेरे, नहीं कोई खुदा है सिवा मेरे (अर्थात् सिवा मैंके, चेतनाके, आत्माके)। "वसेआ रब्बोना कुल्ले शयीन् इल्मा", यानी सब चीजोंमें फैला हुआ इल्म (चेतना ही खुदा है। सूफियोंने भी अरबी फारसी में ये ही बातें कही हैं, "अन् अल् हक्" यानी "अहं ब्रह्मास्मि", "म ही सच है, परमात्मा है, अल्ला हूं"। "सोहम्", अर्थात् वह मैं है, औरमैं वह है। "हक तूई", "तत्वमसि", अर्थात् सच-खुदा तू ही है, तूही वह है। "हमा ऊस्त, हमा अज् ऊस्त, हमा अन्दर् ऊस्त", यानी, सब उसीमें है, सब उसीसे है, सब वही है, वगैरा। और कुरानमें कहा है कि "लाहुल् अस्मा उल् हुस्ना", यानी सब सुन्दर नाम उसीके हैं। "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति", यह वेदका भी वचन है। इञ्जील में भी ईसा और दूसरे नबियों मुनियोंने कहा है, "आइ एण्ड् माइ फ़ादर् आर् वन्", "यी आर् दि लिविङ् टेम्पलस् आफ् गाड्", "इन् हिम् आल् थिंग्ज् लिव् एंड् मूव् एंड हाव् देयर् बीङ्" इत्यादि, अर्थात् मैं और मेरा बनानेवाला एक ही है, तुम्हीसब परमात्माके जिन्दा मन्दिर हो, उसी परमात्मा (चेतना) में सबही चीजें जीती हैं, बसती हैं, और उसीसे अपनी सत्ता (अस्तित्व, हस्ती) पाती हैं। वेदोंमें, गीता आदिमें, यही बातें फिर फिर कही हैं, सिर्फ नमूनेके लिये

انجیل میں بھی یہی کہا ہے - " گاڈ از دی آلفا اینڈ دی اومیگا " -
یعنی پرماتما خدا گاڈ آد اول ہے - انت آخر ہے - مدھیہ بیچ ہے - ہمارے
باہر بھی ہے - ہمارے بھیتر بھی (چیتنا ہوش جان کی شکل سے) ہے *

لا الہ إلا اللہ" اس کلمہ کا ارتھ پہنچے ہوئے رسیدہ (رچھتیتی رشی)
صوفیوں نے یہی کیا ہے کہ "لا موجود إلا اللہ" - یعنی ہے نہیں کوئی چیز
سوا اُس خدا کے - قرآن میں پھر پھر کہا ہے - "ھو الحي لا الہ الا ھو"
" لا الہ إلا أنا" وغیرہ - یعنی وہی آتماہی زندہ ہے - کیونکہ کوئی ہے ہی
نہیں سوا اُسکے- نہیں کوئی موجود ہے سوا میرے - نہیں کوئی خدا ہے
سوا میرے (ارتھات سوائے میں کے - چیتنا کے - آتما کے) " وسع ربنا کل
شئي علما " یعنی سب چیزوں میں پھیلا ہوا علم (چیتنا) ہی خدا ہے -
صوفیوں نے بھی عربی فارسی میں بھی باتیں کہی ہیں- " انا الحق" یعنی
" اہم برہما سمي" - میں ہی سچ ہے - پرماتما ہے - اللہ ہے - " سوہم"
ارتھات وہ میں ہے اور میں وہ ہے - " حق توئی "-" تتومسي" - ارتھات
سچ خدا تو ہی ہے - تو ہی وہ ہے " ہمہ اوست - ہمہ از اوست -
ہمہ اندر اوست " - یعنی سب اسی میں ہے - سب اسی سے ہے - سب
وہی ہے- وغیرہ- اور قرآن میں کہا ہے کہ " لہ الاسماء الحسنیٰ" - یعنی
سب سندر نام اُسی کے ہیں - " ایکم سد وپرا بہودھا ودنتي" یہ وید
کا بھی بچن ہے - انجیل میں بھی عیسیٰ اور دوسرے نبیوں - منیوں نے
کہا ہے- " آئی اینڈ مائی فادر آر ون - یي آر دی لونگ ٹمپلس آف گاڈ-
إن ہم آل تھنگس لو اینڈ موو اینڈ ہاو دیر بیئنگ" - اِتیادی -
ارتھات میں اور میرا بنانیوالا ایک ہی ہے - تمہیں سب پرماتما کے زندہ
مندر ہو — اس پرماتما (چیتنا) میں سب ہی چیزیں جیتی ہیں -
ستی ہیں اور اُسی سے اپنی ستا (استتو-ہستی) پاتی ہیں — ویدوں
میں گیتا آد میں یہی باتیں پھر پھر کہی ہیں — صرف نمونہ کے لئے

यहां कुछ वाक्योंको कहता हूं

यस्मिन् इदं यतश्चेद येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात्परस्माच् च परस्तं प्रपद्ये महेश्वरम् ।। (भागवत)

"देहो देवालयः प्रोक्तः", "शिवोऽहम्", "सर्वं खलु इदं ब्रह्म तज्जलान्" । "नेह नानास्ति किंचन", "एकमेवाद्वितीयम्", "विद्धि त्वमेनं निहितं गुहायां", "एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा", "स वा एष आत्मा हृदि" "हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः", "यद्यद्विभूतिमत् सत्वं...मम तेजोंऽशसंभवम्" "ब्रह्मैतद्धि सर्वाणि नामानि सर्वाणि रूपाणि सर्वाणि कर्माणि बिभर्त्ति", "ससर्वानुभूः", इत्यादि ।

यह परमात्मा सबके हृदयमें मौजूद है इसी बातको कुरानका हवाला देकर सूफियोंने कहा है,

बावजूदे कि मुफ़द्ये तेरा "नहनो अक़रब"
सफ़हे कुरानमें लिखा था मुझे मालूम न था ।

अवतार-मसीह-रसूल ।

इस्लामी कलमेका जो दूसरा जुज़ है, यानी "मुहम्मद दुर्रसूलुल्लाह", इस्का अर्थ अगर यह किया जाय, यानी "यके अज़् रसूलानि अल्लाह", तो किसी दूसरे धर्म वालेको भी इससे इनकार नहीं हो सकता । कुरानका भी यही मंशा है । फिर फिर कहा है, "वले कुल्ले क़ौमिन् हाद", सब क़ौमोंके लिये हिदायत करने वाले भेजे गये हैं, "ला नोफ़र्रिक़ो बैना अहदिम् मिन् रुसुलेह्", यानी रसूलोंमें फर्क़ नहीं है, सब बराबर हैं । सनातनधर्मका मसला तो मशहूर ही है कि जहां जहां जब जब जरूरत होती है अवतार होते हैं । कुरानमें साफ़ कहा है कि "वमा अर्सलना मिन् क़ब्लिका मिर् रसूलिन् इल्ला नूही इलैहे अन्नहू

یہاں کچھہ واکیوں کو کہتا ہوں—

یسسن اِدم بتشچھدم یپھندم یے اِدم سویم
یو اسما تپرسماچچھہ پرستم پر پدیے مہیشورم *

" دیہو دیوالیہ پروکتہ "– " شووهم "–" سروم کہل اِدم برهم تجالی"
" نیہہ ناناست کنچن'' –"ایکمیوادویتم" –" ودهہ تو میتم نهتم کهایام "۔
" ایکو دیوہ سرو بهوتیشہ گوڑہ سور ویاپی سرو بهوتانترآتما "–"سہ وا ایشہ آتما هردي" – " هردینتر جیوتہ پرشہ " " ید ید وبهوتمت ستوم........
مم تیجونش سمبهوم" – " برهمے دهہ سروان ناماں سرواں روپاں سرواں کرماں وبهرتي" – " سسروانیهہ " – ایتیادی—

یہہ پرماتما سب کے هردے میں موجود هے اسي بات کو قرآن کا حوالہ دیکر صوفیوں نے کہا هے—

باوجودیکہ مژدۂ تیرا " نحن و اقرب" صفحہ قرآن میں لکھا تھا مجھے معلوم نہ تھا *

اوتار - مسیح - رسول

اسلامی کلمہ کا جو دوسرا جز هے یعني " محمدرسول‌اللہ" اسکا ارتھہ اگر یہہ کیا جاوے یعنی " یکے از رسولاں اللہ" تو کسي دوسرے دھرم والے کو بهي اس سے انکار نہیں هوسکتا — قرآن کا بهي یہي منشا هے— پھر پھر کہا هے " و لکل قوم هاد " – سب قوموں کے لئے هدایت کرنے والے بهیجے گئے هیں— " لا نفرق بین احد من رسلہ "– یعني رسولوں میں فرق نہیں هے– سب برابر هیں— سناتن دھرم کا مسئلہ تو مشہور هی هے – کہ جہاں جہاں جب جب ضرورت هوتي هے اوتار هوتے هیں— قرآن میں صاف کہا هےکہ "وما ارسلنا من قبلک من رسول الا نوحی الیہ آنہ

ला इलाहा इल्ला अना फ़अबुदून्", यानी "परमात्मा कहता है कि मैं परमात्मा ने जिस जिस रसूलको, संदेश लेजाने वालेको दुनियामें भेजा, सबको सिर्फ एक ही बात सिखाने को भेजा, यानी यह कि सिवा मेरे, सिवा मैंके, सिवा आत्माके, सिवा परमात्माके, जो सब जीवोंके भीतर मैं की शकलसे, चेतनाकी जान की, सूरतसे, बैठा हुआ है, उसके सिवा कोई दूसरा खुदा, दूसरी हस्ती, दूसरा सत् पदार्थ ही नहीं है, और इसलिये उसी परमात्माकी, मैंकी, मेरी ही पूजा करो"।

ख़ुदा और ख़ुदी।

"फ़कत तफावत है नाम ही का"। एक आदमी अल्ला, खुदा, रब्ब, कहता है। एक आदमी आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म कहता है। और महज नामके फर्कसे दिलोंमें फर्क हो जाता है, फिर्का बन्दी होती है, मारपीट होती है। खुदाको खुदी ढांक लेती है। फरिश्ते पर शैतान गालिब हो जाता है। देवताको दैत्य दबा देता है।

हकीक़त, तरीकत, शरीयत।

अगर हम थोड़ा भी गौर करें तो हमको मालूम हो जाय कि उसूली अकायद यानी ज्ञानकांड और हक़ीक़तकी बातें तो सब मजहबोंमें एक हैं ही, इबादात यानी भक्तिकांड और तरीकतकी बातें भी एक ही हैं, और मामिलात यानी कर्मकाण्ड या शरियतकी ऊपरी सतही बातें भी एक हैं, या एक नहीं तो एक सी जरूर हैं। और जब यह मालूम हो जाय तब हमारे दिलोंसे यह तास्सुब, यह हठ, यह दुराग्रह जरूर दूर हो जाय कि हमारी ही नकल सारी दुनिया करे।

لاالہ الا انا فعبدون" - یعني " پرماتما کہتا هے کہ میں پرماتما نے جس جس رسول کو - سندیس لے جانیوالے کر دنیا میں بھیجا - سب کو صرف ایک هي بات سکھانے کو بھیجا - یعني یہہ کہ سوا میرے - سوا میں کے - سوا آتما کے - سوا پرماتما کے - جو سب جیووں کے بیہتر میں کی شکل سے - چیتنا کي جان کي صورت سے بیٹھا هوا هے - اُسکے سوا کوئي دوسرا خدا - دوسری هستي - دوسرا ست پدارتھہ هی نہیں هے - اور اس لئے اسی پرماتما کي - میں کي - میري هي پوجا کرو" *

خدا اور خودی

" فقط تفاوت هے نام هي کا " - ایک آدمي اللہ - خدا - رب - کہتا هے - ایک آدمي آتما - پرماتما - ایشور و برهم کہتا هے - اور محض - نام کے فرق سے دلوں میں فرق هوجاتا هے - فرقہ بندي هوتي هے - مارپیٹ هوتی هے - خدا کو خودي ڈھانک لیتي هے - فرشتہ پر شیطان غالب هو جاتا هے - دیوتا کو دیتیہ دبا لیتا هے *

حقیقت - طریقت - شریعت

اگر هم تھوڑا بھی غور کریں تو هم کو معلوم هو جاے کہ اُصولی عقائد یعني گیان کانڈ اور حقیقت کي باتیں تو سب مذهبوں میں ایک هیں هي - عبادات یعني بھکتي کانڈ اور طریقت کي باتیں بھي ایک هي هیں - اور معاملات یعني کرم کانڈ یا شریعت کی اوپري سطحي باتیں بھي ایک هیں - یا ایک نہیں تو ایک سي ضرور هیں - اور جب یہ معلوم هو جاے تو همارے دلوں سے یہ تعصب - یہ هٹ - یہ هواگرہ ضرور دور هو جاے کہ هماري هي نقل ساري دنیا کرے *

धर्मोंमें समानता।

कोई नमाजके नामसे, कोई सन्ध्याके नामसे, कोई "प्रेयर" के नामसे, उसी एक परमात्मा, अल्ला, 'गाड' की याद करते हैं। कोई निन्नानबे नाम तस्बीह पर जपते हैं, कोई एक सौ आठ नाम माला पर, कोई दूसरी जबानमें उसीके नाम "रोजरी" पर। कोई रसूल पैगम्बरके नामसे, कोई मसीहाके नामसे, कोई अवतारके नामसे, उन अच्छे इन्सानोंको ताजीम आदर पूजाके भावसे याद करते हैं, उनकी स्तुति और "नात" करते हैं, जिन्होंने अपने अपने समयमें आदमियोंका बहुत बड़ा भला करने का जतन किया, उनकी दुनिया और आकबत बनानेकी कोशिश की, और उनके दिलोंको बदीसे हटाकर नेकीकी तरफ लगानेकी फिक्र की। जब जब जहां जहां जिस जिस कौममें बदी बढ़ती है, शैतानका जोर ज्यादा होता है, नेकी घटती है, फरिश्ते कमजोर हो जाते हैं, वहां वहां फिरसे धर्म मजहबको कायम और मजबूत करनेके लिये, और अधर्मको और असुरोंको दबानेके लिये (अस्ल असुर तो अहंकार काम क्रोध लोभ आदि है) परमात्माकी ओरसे कहिये, उस कौमकी रूहमेंसे कहिये, (क्योंकि वह रूह भी खुदाका नूर ही है), रसूल और मसीहा और अवतार पैदा होते हैं, जो उस कौमके कलब अर्थात् हृदयको अपने कलबके नमूनेके जोरसे बदल देते हैं।

यह बात सभी मजहबवाले मानते हैं कि खुदा है। सबसे बड़ा खुदा, अल्लाहू अकबर, महा-देव, एक है, वाहिद है, अद्वितीय है—यह भी सब मानते हैं। पुण्यका फल सुख, पापका फल दुख, जैसा करो वैसा भरो, सजा-जजा, स्वर्ग-नरक, जन्नत-जहन्नुम, हेवन्-हेल्, यह भी सब मानते हैं। रोजा-व्रत-उपवास-फ़ास्ट, हज-तीर्थ यात्रा-पिल्ग्रिमेज, और ज़कात यानी धर्मार्थ दान—यह भी सब मजहबोंमें है। अगर एक मजहबवाले ओम् कहते हैं तो दूसरे आमीं, और तीसरे एमेन,

دھرموں میں سمانتا۔

کوئی نماز کے نام سے۔ کوئی سندھیا کے نام سے۔ کوئی "پریئر" کے نام سے۔ اُسی ایک پرماتما۔اللہ (گاڈ) کی یاد کرتے ہیں۔۔ کوئی ۹۹ نام تسبیح پر جپتے ہیں - کوئی ۱۰۸ نام مالا پر - کوئی دوسری زبان میں اُسکے نام "روزری" پر ۔۔ کوئی رسول پیغمبر کے نام سے - کوئی مسیحا کے نام سے- کوئی اوتار کے نام سے - اُن اچھے انسانوں کو تعظیم آدر پوجا کے بھاو سے یاد کرتے ہیں - انکی استتی اور نعت کرتے ہیں جنھوں نے اپنے اپنے سمے میں آدمیوں کا بہت بڑا بھلا کرنے کا جتن کیا - ان کی دنیا اور عاقبت بنانے کی کوشش کی- اور ان کے دلوں کو بدی سے ھٹاکر نیکی کی طرف لگانے کی فکر کی۔۔ جب جب جہاں جہاں جس جس قوم میں بدی بڑھتی ھے - شیطان کا زور زیادہ ہوتا ھے - نیکی گھٹتی ھے - فرشتے کمزور ھوجاتے ہیں - وھاں وھاں پھر سے دھرم ،مذھب کو قایم اور مضبوط کرنے کے لئے- ادھرم کو اور اسروں کو دبانے کے لئے (اصل اسرتو اھنکار - کام - کرودھہ - لوبھہ آد ہیں) - پرماتما کی اور سے کہئے - اس قوم کی روح میں سے کہئے - (کیونکہ وہ روح بھی خدا کا نور ھی ھے) رسول اور مسیحا اور اوتار پیدا ھوتے ہیں - جو اس قوم کے قلب ارتھات ھردے کو اپنے قلب کے نمونہ کے زور سے بدل دیتے ہیں۔۔

پہلہ بات سبھی مذھب والے مانتے ہیں کہ خدا ھے ۔۔ سب سے بڑا خدا - اللہ اکبر - مہادیو - ایک ھے- واحد ھے - ادویتیہ ھے- یہہ بھی سب مانتے ہیں۔۔ پنیہ کا پھل سکھہ - پاپ کا پھل دکھہ - جیسا کرو ویسا بھرو - سزا جزا - سورگ نرک - جنت جہنم - ھیون ھل - یہہ بھی سب مانتے ہیں۔۔ روزہ - برت - اُپواس - فاسٹ - حج - تیرتھہ یاترا - پلگرمیج اور زکوۃ یعنی دھرمارتھہ دان - یہہ بھی سب مذھبوں میں ھے۔۔ اگر ایک مذھب والے اُوم کہتے ہیں، تو دوسرے آمین - اور تیسرے امین۔۔

और तीनों एक ही चीज़ हैं और एक ही मतलब रखते हैं। हिन्दू लोग धर्मके चार मूल, चार जड़ बुनियाद, मानते हैं, श्रुति, स्मृति, सदाचार, और "स्वस्य च प्रियमात्मनः", या "आत्मनश्चैव संतोषः", या "हृदयाभ्यनुज्ञा"। मुसलमान लोग भी मज़हबकी बुनियाद चार ही मानते हैं, जो क़रीब क़रीब यही चीज़ हैं, यानी, कुरान, हदीस, इज्मा, और क़यास।

रस्म-रिवाजकी समानता।

ऊपरी रस्मों और कर्मोंमें भी बहुत सदृशता मुशाबिहत है। कोई हिलाल और तारा टोपियोंमें लगाते हैं, कोई त्रिपुण्ड्र उर्ध्व पुण्ड्र वग़ैरः, जो भी हिलाल और तारेकी ही दूसरी शकलें हैं, पेशानी पर चन्दन वग़ैरः से बना लेते हैं। कोई सलीबकी शकलके आवेजे कपड़ों पर लटकाते हैं, जो भी स्वस्तिका और त्रिपुण्ड्र से मिलते हैं। त्रिशूलकी शकलमें यह सब शकलें शामिल हैं। कोई सिरपर बाल बढ़ाते हैं, कोई ठुड्ठीपर। कोई जनेऊ और जन्तर (यज्ञोपवीत और यन्त्र) पहिनते हैं, कोई तावीज। कोई बुतपरस्त हैं तो कोई क़ब्रपरस्त। निराकारता और एकता और वहदतके महावाक्य और कलमें पढ़ते हुए भी सभी, उस एक अकेलेपर देर तक मन न जमा सकनेके सबबसे, शकल और नामरूपवाली चीजों में मन अंटकाते ही हैं। "द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्त्तं चैवामूर्त्तंच", यानी परमात्मा अल्लाकी दो शकलें हैं, एक बेशकल और एक बाशकल, और सारी दुनिया ही यह दूसरी शकल है। इसलिये कोई मूर्तियोंकी पूजा करते हैं, कोई शहीदों, पीरों, औलियोंकी क़ब्रोंपर माला फूल चादर चढ़ाते हैं और दीये जलाते हैं। जिन्हीं जीवोंको कोई देवता और दैत्यके नामसे पुकारते हैं, उन्हींको दूसरे फरिश्ते, मलायक, शैतान जिन्नात, "एंजल्स्", "फेयरीज़", वग़ैरः के नामसे जानते मानते हैं। कोई देवी देवताओंकी सवारी निकालते हैं, तो दूसरे ताजिये निकालते हैं;

تینوں ایک ھي چیز ھین اور ایک ھي مطلب رکھتے ھین — ھندو لوگ دھرم کے چار مول - چار جڑ بنیاد - مانتے ھین — شروتي - سمرتي - سدا چار - اور "سوسیۃ چہ پریدانمنۃ" - "یا آتمنشچیو سنتوشۃ" - یا "ھردیا بھینوگیا" — مسلمان لوگ بھي مذھب کي بنیاد چار ھی مانتے ھین - جو قریب قریب یہي چیز ھین — یعني قرآن - حدیث - اجماع - اور قیاس —

رسم و رواج کی سمانتا—

اوپری رسموں اور کرموں مین بھي بہت سدرشتا مشابہت ھے— کوئي ھلال اور تارا تویزوں مین لگاتے ھین - کوئي ترپنڈر- اردھو پنڈر وغیرہ - جو بھي ھلال اور تارے کي ھي دوسري شکلین ھین- پیشاني پر چندن وغیرہ سے بنا لیتے ھین—کوئي صلیب کي شکل کے آویزے کپڑوں پر لگاتے ھین - جو بھي سوستکا اور ترپنڈر سے ملتے ھین— ترشول کی شکل مین یہ سب شکلین شامل ھین —کوئي سر پر بال بڑھاتے ھین - کوئي ٹھڈي پر—کوئي حنیۃ اور جنتر (یگیوپویت اور ینتر) پہنتے ھین - کوئي تعویذ—کوئي بت پرست ھے تو کوئي قبر پرست— نرا کارتا اور ایکتا, اور وحدت کے مہاواکیۃ اور کلمے پڑھتے ھوئے بھي سبھي - اس ایک اکیلے پر ڈیر تک من نۃ جماسکنے کے سبب سے- شکل اور نام روپ والي چیزوں مین من اٹکاتے ھي ھین—"دویراو برھمنو روپے مور- تنچیوامورتنچۃ" - یعني پرماتما اللۃ کي دو شکلین ھین - ایک بے شکل اور ایک با شکل- اور ساری دنیا ھي یہۃ دوسري شکل ھے— اس لئے کوئي مورتیوں کي پوجا کرتے ھین - کوئی شہیدوں - پیروں - اولیوں کی قبروں پر مالا پھول چادر چڑھاتے ھین اور دیے جلاتے ھین— جنھیں جیووں کو کوئي دیوتا اور دیتیۃ کے نام سے پکارتے ھین - انھیں کو دوسرے فرشتۃ - ملائک ، شیطان - جنات - "انجلس"- "فیریز" وغیرہ کے نام سے جانتے مانتے ھین— کوئی دیوی - دیوتاوں کی سواری نکالتے ھین- تو دوسرے تعزیے نکالتے ھیں—

और ताजियों पर अर्जियां लटकाते हैं। सभी मन्नतें मानते हैं। सभी झाड़ फूकमें विश्वास करते हैं। सभी गुरु-शिष्य, पीरमुरीद, सेंट-डिसाइपल के रिश्तोंको मानते हैं। अगर एक मजहबवाले श्राद्ध तर्पण ब्रह्मभोज वगैरह करते हैं, तो दूसरे मजहब वाले भी गुजरे हुवोंके लिये चेहलुम पर फातिहा पढ़ते हैं, और बारे-वफात और शबिबरात पर उनकी रूहकी भलाईके लिये गरीबोंको खाना खिलाते हैं। खुदाको लामकान और निराकार कहते हुए भी सभी उसके लिए खास खास मकान बनाते हैं, मन्दिरके नामसे, मसजिदके नामसे, चर्चके नामसे। बैतुल्ला, देवालय, "हौस आफ् गाड्"—इन तीनों नामोंके लफ्जी मानी भी एक ही हैं, अर्थात् ईश्वरका घर। और इन सब मकानोंकी शकलमें भी कुछ समानता, कुछ मशाबिहत, होती है। यानी आस्मानकी तरफ सभी उठना चाहते हैं, शिखरके नामसे, गोपुर और कलशके नामसे, गुंबद और मुनारे, के नामसे, और स्टीप्ल, टावर, स्पायरके नामसे। अगर हिन्दुओंमें विश्वनाथ-दर्शन और गङ्गास्नानकी महिमा है, तो मुसलमानोंमें काबेके मन्दिरमें जाना और जम्-जम् कुण्डमें स्नान करना बड़ा पुण्य है। और मुशाहिबत देखिये। काबेके मन्दिरके अन्दर दो पत्थर हैं, एकका नाम हज्रुल अस्वद् और एकका नाम हज्रुल यमानी, जो अब दीवारमें लगाये हैं कहा जाता है कि पहिले फर्श पर ही थे। हाजी यात्री लोग इन पर बोसा देते हैं, और काबेके मन्दिरकी परिक्रमा सात बार करते हैं, और उसके आगे सहनमें दण्डवत् करते हैं। और यह सब काम अङ्गा पैजामा कुर्ता टोपी वगैरा पहिन कर नहीं किया जा सकता, बल्कि नंगे सिर, नंगे पैर, एक धोती और एक उपर्नाही पहिन कर, जिनको एहाम कहते हैं, और ये बिना सिलाईके होने चाहियें। जैसे हिन्दुओंमें जो लोग बहुत पवित्रता चाहते हैं वे स्नान करके रेशमी पीताम्बर उपर्ना पहिन कर मन्दिर-यात्रा, देवता-दर्शन, आदि करते हैं, और ये भी बिना सिलाईके, "अहते वाससी" होने चाहियें। सभी पोथी परस्त हैं

اور تعزیوں پر مرثیاں لٹکاتے ھیں— سبھی منتیں مانتے ھیں - سبھی جھاڑ
پھونک میں وشواس کرتے ھیں- سبھی گررو ششیہ- پیر مرید - سینٹ ڈیسائپل-
کے رشتوں کو مانتے ھیں— اگر ایک مذھب والے شرادھہ ترپن برھم بھوج
وغیرہ کرتے ھیں- تو دوسرے مذھب والے بھی گذرے ھوؤں کے لئے چہلم پر
فاتحہ پڑھتے ھیں - اور بارہ وفات اور شب برات پر اُنکی روح کی
بھلائی کے لئے غریبوں کو کھانا کھلاتے ھیں— خدا کو لامکان اور نراکار
کہتے ھوئے بھی سبھی اسکے لئے خاص خاص مکان بناتے ھیں - مندر کے
نام سے - مسجد کے نام سے - چرچ کے نام سے— بیت اللہ - دیوالے -
"ھاوس آف گاڈ"- ان تینوں ناموں کے لفظی معنی بھی ایک ھی ھیں-
ارتھات ایشور کا گھر— اور ان سب مکانوں کی شکل میں بھی کچھہ سمانتا -
کچھہ مشابہت ھوتی ھے—یعنی آسمان کی طرف سبھی اُتھنا چاھتے ھیں—
شکھر کے نام سے - گوپر اور کلس کے نام سے - گنبد اور منارے کے نام سے -
اور اسٹیپل - ٹاور - اسپائر کے نام سے— اگر ھندوں میں وشوناتھہ درشن
اور گنگا اسنان کی مہما ھے - تو مسلمانوں میں کعبہ کے مندر میں جانا
اور زمزم کنڈ میں اسنان کرنا بڑا پنیہ ھے — اور مشابہت دیکھئے —
کعبہ کے مندر کے اندر دو پتھر ھیں— ایک کا نام حجرالاسود - اور ایک
کا نام حجرالیمانی - جو اب دیوار میں لگاے ھیں کہا جاتا ھے کہ
پہلے فرش پر ھی تھے — حاجی یاتری لوگ ان پر بوسہ دیتے ھیں اور
کعبہ کے مندر کی پرکرما سات بار کرتے ھیں - اور اُسکے آگے صحن میں
دنڈوت کرتے ھیں— اور یہ سب کام انگا پاجامہ کرتا ٹوپی وغیرہ پہنکر
نہیں کیا جا سکتا - بلکہ ننگے سر - ننگے پیر - ایک دھوتی اور ایک اُپرنا ھی
پہنکر - جسکو احرام کہتے ھیں - اور یہہ بنا سلائی کے ھونے چاھئیں— جیسے
ھندوں میں جو لوگ بہت پوترتا چاھتے ھیں وہ اسنان کرکے ریشمی پیتامبر
اُوڑھنا پہن کر مندر یاترا - دیوتا درشن - آد کرتے ھیں اور یہہ بھی بنا
سلائی کے- "اچھتے واسسی" ھونے چاھئیں— سبھی پوتھی پرسد ھیں -

एक वेदको पूजते हैं, एक इञ्जीलको, एक कुरान को। सभी अपनी अपनी पोथियोंको एक ही नामसे पुकारते हैं—ब्रह्मवाक्य, गा(ड)स्पेल, कलामुल्ला, यानी ईश्वर खुदा परमात्मा अल्ला गॉडकी कही बात। हिन्दुओंमें जैसे कथा पुराणका दस्तूर है वैसा ही मुसलमानोंमें मौलूद, खुतबा, वाज की चाल हैं। एक वुजू करते हैं तो दूसरे स्नान। एक आसन बिछाते हैं तो दूसरे सज्जादा। एक नमाजके लिए उठने, बैठने, दण्डवत् करने के कायदे रखते हैं, तो दूसरे सन्ध्याके लिये सूर्योपस्थान, अङ्गन्यास, करन्यास, वगैराके। नमाजमें सीने तक हाथ उठाना चाहिये कि कान तक, और संध्यामें प्राणायामके लिये हाथ सीधे नाक तक ले जाना चाहिये, या सिरके चारोतरफ घुमाकर, ऐसी ऐसी बातोंपर अलग अलग फिक और सम्प्रदाय दोनोंमें बन गये हैं—ईसाइयोंमें बीसियों, मुसलमानोंमें बहत्तर, हिन्दुओंमें सैकड़ों बल्कि हजारों। अगर एक अजानकी पुकारसे आदमियोंको जगाकर खुदाकी तरफ लगाते हैं, तो दूसरे शङ्ख घण्टासे वही काम लेते हैं। ईसाइयोंमें भी "चर्च बेल्स" होते हैं। अगर एक कुर्बानी करते हैं तो दूसरे भी बलिदान। दोनों गोश्त खाते हैं। कोई एक जानवर यानी गायका गोश्त हराम समझते हैं तो कोई दूसरे जानवर यानी सूवरका। अफसोस तो यह है कि दोनोंमें अपनी नफ्स, अपने स्वार्थ और खुदगरजी, अपने अहंकार, काम, क्रोध, वगैराकी कुर्बानी और "तर्कि हैवानात," मांसवर्जन, बहुत कमलोग करते हैं। दूसरोंका ही बलिदान करते हैं। अपने भीतर जो जानवर और पशुता हैं उनका नहीं। पर खुशीकी बात है कि गुनाह, पाप, "सिन्" के धोने और मिटानेके लिये भी सभी एक ही उपाय करते हैं, पश्चात्ताप-प्रख्यापन प्रायश्चित्त, नदम एतराफ़-तलाफ़ी (कफ्फ़ारा, तौबा), "रिपेंटंस-कन्फ़ेशन्-एक्सपियेशन्"।

पुनर्जन्मके बारेमें भी यह खयाल करने की बात है कि कुरान

ایک وید کو پوجتے هیں - ایک انجیل کو - ایک قرآن کو — سبھي اپني اپني پوتھیوں کو ایک هي نام سے پکارتے هیں - برهم واکیه - گا ڈ) سپل - کلام‌الله — یعني ایشور خدا پرماتما الله گاڈ کي کهی بات — هندؤں میں جیسے کتھا پران کا دستور هے ویسا هی مسلمانوں میں مولود - خطبه - وعظ کي چال هے — ایک وضو کرتے هیں تو دوسرے اسنان — ایک آسن بچھاتے هیں تو دوسرے سجادہ — ایک نماز کے لئے اٹھنے - بیٹھنے - ڈنڈوت کرنے کے قاعدے رکھتے هیں - تو دوسرے سندھیا کے لئے سوریه‌پستھان - انگنیاس - کرنیاس وغیرہ کے — نماز میں سینه تک هاتھه اٹھانا چاهئے که کان تک - اور سندھیا میں پرانایام کے لئے هاتھه سیدھے ناک تک لے جانا چاهئے - یا سر کے چاروں طرف گھماکر - ایسي ایسي باتوں پر الگ الگ فرقے اور سمپردائے دونوں میں بن گئے هیں — عیسائیوں میں بیسیوں - مسلمانوں میں بہتر - هندؤں میں سیکڑوں بلکه هزاروں — اگر ایک اذان کي پکار سے آدمیوں کو جگاکر خدا کي طرف لگاتے هیں - تو دوسرے شنکھه گھنٹه سے وهي کام لیتے هیں — عیسائیوں میں بھي " چرچ بلس" هوتے هیں — اگر ایک قرباني کرتے هیں - تو دوسرے بھي بلدان — دونوں گوشت کھاتے هیں — کوئي ایک جانور یعني گاے کا گوشت حرام سمجھتے هیں - تو کوئي دوسرے جانور یعني سور کا — افسوس تو یه هے که دونوں میں اپني نفس - اپنے سوارتھه اور خود غرضي - اپنے اهنکار - کام - کرودھه وغیرہ کي قرباني اور " ترک حیوانات " - مانس ورجن - بہت کم لوگ کرتے هیں — دوسروں کا هي بلدان کرتے هیں - اپنے بھیتر جو جانور اور پشوتا هیں اُنکا نہیں — پر خوشي کي بات هے که گناہ - پاپ - "سن" کے دھونے اور مٹانے کے لئے سبھي ایک هي اُپاے کرتے هیں — پشچاتاپ - پرتھیاپن - پرایشچت — ندم - اعتراف - تلافي - (کفارہ - توبه) - ریپنٹنس - کنفشن - اکس پیئشن *

پنرجنم کے بارے میں بھي یهه خیال کرنے کي بات هے که قرآن

या हदीसमें कहीं इससे इनकार नहीं किया है। बल्कि कुछ कलाम ऐसे मिलते हैं जिनका इशारा कुछ लोगों की समझ में पुनर्जन्मके मानने की तरफ है। 'कुल् योह्यी हल्लज़ी अन्शाअहा अव्वलमर्रा" यानी जिसने पहिले तुमको जिलाया है वही तुमको दुबारा भी जिला सकता है। "कैफ़ा तक्फ़ुरूना बिल्लाहे व कुँतुम् अम्वातन् फ़ा अह्यकुम् सुम्मा युमीतोकुम् सुम्मा योह्यिकुम् सुम्मा इलैहे तर्जऊन्" यानी तुम अल्ला से किस तरह इन्कार कर सकते हो, हालां कि तुम बेजान थे, उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, और फिर तुम्हें मारेगा, और फिर जिलायेगा, और फिर उसकी तरफ लौट कर जाओगे। यह बात गीता की सी ही मालूम होती है,

बहूनां जन्मनामंते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते ।

यानी बहुत जन्मोंके बाद ज्ञान मारिफ़त पाकर आदमी मेरे पास, परमात्माके पास पहुंच जाता है।

कुछ लोग कुरान की इन बातोंके मानी दूसरी तरह लगाते हैं। पर इसमें तो कोई शक है ही नहीं कि खलीफ़ा हारूं रशीदके ज़मानेके मोतज़िला फ़िर्केके लोग पुनर्जन्म को मानते थे। अल् गिज़ाली वगैरा और सूफ़ी लोग भी इसमें एतबार (विश्वास) करते थे। मौलाना रूमका कहना तो मशहूर है,

हम् चो सब्ज़ा बारहा रोईदः अम् ।
हफ़्त सद् हफ़्ताद् क़ालिब दीदः अम् ।

यानी घासके ऐसा मैं फिर फिर उगा हूँ, सात सौ सत्तर जिस्म मैंने देखे हैं। ईसा मसीह ने भी एक मौके पर कहा कि जो इलैजा नामका नबी था वही जान दी बाप्टिस्ट नामका फ़क़ीर के रूपमें फिर जन्मा है। आग़ा खां के फ़िर्केके मुसल्मान भी तनासिख़ यानी पुनर्जन्म को मानते हैं ।

یا حدیث میں کہیں اس سے انکار نہیں کیا ہے— بلکہ کچھہ کلام ایسے ملتے ہیں جن کا اِشارہ کچھہ لوگوں کی سمجھہ میں پنرجنم کے ماننے کی طرف ہے—" قل یحییہاالذی انشاھا اول مرة "— یعني جس نے پہلے تمکو جلایا ہے وھی تم کو دوبارہ بھي جلا سکتا ہے— " کیف تکفرون باللہ و کنتم امواتاً فا حیاکم ثم یمیتکم ثم یحییکم ثم الیہ ترجعون " - یعني تم اللہ سے کس طرح انکار کر سکتے ھو - حالانکہ تم بیجان تھے - اس نے تمھیں زندہ کیا - اور پھر تمھیں ماریگا - اور پھر جلائیگا - اور پھر اسکي طرف لوٹ کر جاؤگے— یہہ بات گیتا کي سي ھی معلوم ھوتي ہے—

بہونام جنمنامنتے گیان وان مام پر پدیتے—

یعني بہت جنموں کے بعد گیان معرفت پاکر آدمي میرے پاس-پرماتما کے پاس پہونچ جاتا ہے *

کچھہ لوگ قرآن کي ان باتوں کے معني دوسري طرح لگاتے ھیں— پر اِس میں تو کوئي شک ہے ھي نہیں کہ خلیفہ ھارون رشید کے زمانہ کے معتزلہ فرقہ کے لوگ پنرجنم کو مانتے تھے— الغزالی وغیرہ اور صوفي لوگ بھی اس میں اعتبار (وشواس) کرتے تھے— مولانا روم کا کہنا تو مشہور ہے—

ھمچو سبزہ بارھا روئیدہ ام
ھفت صد ھفتاد قالب دیدہ ام—

یعني گھاس کے ایسا میں پھر پھر اُگا ھوں - سات سو ستر جسم میں نے دیکھے ھیں— عیسیٰ مسیح نے بھي ایک موقع پر کہا کہ جو الیجا نام کا نبي تھا وھي جان دي باپٹسٹ نام کا فقیر کے روپ میں پھر جنما ہے— آغا خاں کے فرقہ کے مسلمان بھي تناسخ یعنی پنر جنم کو مانتے ھیں *

मुख्तसर यह कि अगर "चश्मानि दिल" से, मुहब्बत और नेकीकी आंखसे, देखिये, तो आपको सब एक ही और एकसे ही देख पड़ेंगे, सब दोस्त ही दोस्त देख पड़ेंगे, और सबकी दुनिया भी और सबकी आकबत भी बनैगी। लेकिन अगर खुदी और शेखी-मशीखत, घमंड, हठ, दुराग्रह, तास्सुबकी और अहमहमिका यानी हमहमाकी, आंखोंसे देखियेगा, और इसी भूलमें मस्त रहियेगा कि मेरा मजहब सबसे अच्छा और बाकी सब खराब हैं, और दूसरे मजहबवालोंको जैसे हो तैसे, अकल और हिकमतसे न बन पड़े ता जबरदस्तीसे, अपने मजहबमें लाना चाहिये, अगर हम लोग ऐसा खयाल करैंगे तो दूसरोंका भी और खाहमखाह अपना भी काम बिगाड़ेंगे।

अस्ल बात यह जान पड़ती है कि, पढ़े लिखे या अनपढ़ भी जब साफ साफ यह कहते शर्माते हैं कि हम दूसरों से अच्छे हैं, पर अहंकार भी उनका साथ ही जोर करता ही है, तब उस अहंकार गुरूरका इस बहानेसे स्वाद जायका लेते हैं कि हमारा ईश्वर, हमारा अल्ला, हमारा यहोवा, हमारा गाड, सब दूसरोंके देवतासे बड़ा है, हमारी पोथी, वेद, या, तोरेत, या इंजील, या कुरान, और सब दूसरी पोथियों से उमदा है, हमारा अवतार पूर्ण परमात्मा है, हमारा मसीहा खुदा का इकलौता बेटा है, हमारा नबी खातिमुन्नबूअत है। भाइयो, दोस्तो, हम लोगोंको इस अहंकार और गुरूर के धोखेमें नहीं पड़ना चाहिये। परमात्मा खुदा अल्ला अनंत, ला-इन्तिहा, "अन्‌एंडिंग" है, और वही हमारी आपकी रूह है। इसमेंसे अनगिनत अवतार और मसीह और रसूल आये, आ रहे हैं, और आते रहेंगे। अपने अपने देश और जमाने के लिये सबने अच्छी अच्छी बात सिखायी और सिखा रहे हैं और सिखावैंगे। सब को मुनासिब इज्जत आदर करना चाहिये। और यह कभी खयाल में नहीं लाना चाहिये कि जो किसी एक ने कोई खास तरीका किसी देश कालके लिये बताया, वही जबर्दस्तीसे सब आदमियोंसे सब जगह सब हालतों में मनवाया जाय और बाकी सबकी बातें मिटा दी जायं।

مختصر یہہ کہ اگر چشمان دل سے - محبت اور نیکي کي آنکھہ سے دیکھئے تو آپ کو سب ایک هي اور ایک سے هي دیکھہ پڑینگے - سب دوست هی دوست دیکھہ پڑینگے - اور سب کي دنیا بھي اور سب کي عاقبت بھي بنیگي - لیکن اگر خودي اور شیخي - مشیخت - گھمنڈ - هٹ - دراگرہ - تعصب کي اور اهمکا یعني هممہ کي - آنکھوں سے دیکھئیگا اور اسی بھول میں مست رهئیگا کہ میرا مذهب سب سے اچھا اور باقی سب خراب هیں - اور دوسرے مذهب والوں کو جیسے هو تیسے - عقل اور حکمت سے نہ بن پڑے تو زبردستي سے - اپنے مذهب میں لانا چاهئے - اگر هم لوگ ایسا خیال کرینگے تو دوسروں کا بھي اور خواہ مخواہ اپنا بھي کام بگاڑینگے *

اصل بات یہہ جان پڑتي هے - کہ پڑهے لکھے یا ان پڑهہ بھي جب صاف صاف یہہ کہتے شرماتے هیں کہ هم دوسروں سے اچھے هیں - پر اهنکار بھي اُن کا ساتھہ هي زور کرتا هے - تب اُس اهنکار غرور کا اِس بہانہ سے سواد ذائقہ لیتے هیں کہ همارا ایشور - همارا اللہ - همارا بھروا - همارا گاڈ - سب دوسروں کے دیوتا سے بڑا هے - هماري پوتھي - وید - یا توریت - یا انجیل - یا قرآن - اور سب دوسري پوتھیوں سے عمدہ هے - همارا اوتار پورن پرماتما هے - همارا مسیحا خدا کا اِکلوتا بیٹا هے - همارا نبی خاتم النبیوت هے - بھائیو - دوستو - هم لوگوں کو اس اهنکار اور غرور کے دھوکے میں نہیں پڑنا چاهئے - پرماتما خدا اللہ الصمد - لا انتہا - "ان اینفنٹ" هے اور وهی هماری آپ کي روح هے - اس میں سے ان گنت اوتار اور مسیح اور رسول آے - آرهے هیں - اور آتے رهینگے - اپنے اپنے دیش اور زمانہ کے لئے سب نے اچھی اچھي بات سکھائي - اور سکھا رهے هیں - اور سکھائینگے - سب کی مناسب عزت آدر کرنا چاهئے - اور یہہ کبھي خیال میں نہیں لانا چاهئے کہ جو کسي ایک نے کوئي خاص طریقہ کسي دیش کال کے لئے بتایا - وهي زبردستي سے سب آدمیوں سے سب جگہہ سب حالتوں میں منوایا جاے اور باقي سب کي باتیں مٹادی جائیں *

मजहबमें जबरदस्ती नहीं ।

ऐसी जबरदस्तीकी कार्रवाइयां चाहे थोड़े दिनके लिये कारगर हो भी जायं, पर बहुत जल्द ही जवाल और मुसीबत उनके करने- वालोंपर आती हैं। जो जब्रसे जल्द बढ़ता है वह दूसरोंके जब्रसे वैसाही जल्द घटता भी है। वजह सीधी है, उसके दुश्मनोंकी संख्या हमेशा बढ़ती रहती है जो उसका बुरा चेतते ही रहते हैं। पच्छिमकी कौमोंका हाल देखिये। इस देशमें कहावत है कि जब चींटेके पर निकलते हैं तब जानना चाहिये कि उसकी मौत करीब है। और भी बड़ी मोटी बात है। धमकाकर मनका विश्वास तो बदला नहीं ही जा सकता। अगर मारपीटकर, डर दिखाकर, हम दिनके वक्त किसीसे कहलवा भी लें कि दिन नहीं रात है, तो उसका मन तो बदलेगा नहीं. झूठ बोलने की, झूठे और कायरका काम करनेकी, आदतही उसमें और उसकी नस्ल में कायम होगी। ऐसी ही बातोंका खयाल करके कुरानमें "वारम् वारम्", बारबार, कहा भी है. "ला इक्राहा फ़िद् दीन" यानी मज- हबके मामिलेमें कोई जबरदस्ती नहीं है, "लकुम् दीनुकुम् वलेयदीम्" यानी तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन, हमारे लिये हमारा दीन, "उद्दू एला सबीलि रब्बका बिल् हिक्मते वल् मौएज़्ज़तिल् हसनते", यानी रब्बकी तरफ़ बुलाओ लोगों को हिकमतकी राहसे, और अच्छी नसीहतोंसे।

कहनीसे करनी बड़ी ।

सबसे उम्दा हिकमत तो अपनी जिंदगीका नमूना है।

"यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।"

"एक्जाम्पल् टीचेज बेटर दैन प्रीसेप्ट"।

जिसको लोग जानते हैं कि यह आदमी अच्छा है, नेकनीयत ,है

مذہب میں زبردستی نہیں -

ایسی زبردستی کی کارروائیاں چاہے تھوڑے دنوں کے لئے کارگر ہو بھی جائیں - پر بہت جلد ہی زوال اور مصیبت اُنکے کرنیوالوں پر آتی ہے — جو جبر سے جلد بڑھتا ہے وہ دوسروں کے جبر سے ویسا ہی جلد گھٹتا بھی ہے — وجہ سیدھی ہے - اُسکے دشمنوں کی سنکھیا ہمیشہ بڑھتی رہتی ہے - جو اُسکا برا چیتتے ہی رہتے ہیں — پچھم کی قوموں کا حال دیکھئے — اُس دیس میں کہاوت ہے کہ جب چینٹے کے پر نکلتے ہیں تب جاننا چاہئے کہ اُسکی موت قریب ہے — اور بھی بڑی موٹی بات ہے — دھرم من کا وشواس تو بدلا نہیں ہی جا سکتا — اگر مار پیٹ کر - ڈر دکھاکر - ہم ہی کے وقت کسی سے کہلوا بھی لیں کہ دن نہیں رات ہے - تو اُسکا من تو بدلیگا نہیں - جھوٹ بولنے کی - جھوٹے اور کایر کا کام کرنیکی - عادت ہی اُس میں اور اُسکی نسل میں قایم ہوگی — ایسی ہی باتوں کا خیال کرکے قرآن میں "وارم وارم" بار بار کہا بھی ہے - "لا اکراہ فی الدین" یعنی مذہب کے معاملہ میں کوئی زبردستی نہیں ہے - "لکم دینکم و لی دین" یعنی تمہارے لئے تمہارا دین - ہمارے لئے ہمارا دین - "ادع الی سبیل ربک بالحکمۃ و الموعظۃ الحسنۃ" - یعنی رب کی طرف بلاؤ لوگوں کو حکمت کی باتوں سے - اور اچھی نصیحتوں سے ۔

کہنی سے کرنی بڑی

سب سے عمدہ حکمت تو اپنی زندگی کا نمونہ ہے —

"ید یدا چرتی شریشٹھہ تتدیو اِتروجنہ" -

"اکزامپل تیچز بٹر دین پریسپٹ" -

جس کو لوگ جانتے ہیں کہ یہ آدمی اچھا ہے - نیک نیت ہے -

सच बोलता है, धोखा नहीं देता, दूसरोंका दिलसे भला चाहता है, उसकी शिक्षाको सभी बातोंमें लोग मानने लगते हैं। पैग़म्बर मुहम्मदको उनके जान पहिचानके आदमी 'अल् अमीन' यानी विश्वासपात्र कहके पुकारते थे। इससे बढ़कर दूसरा ख़िताब हो नहीं सकता। आज भी यही अपनी आंखोंके सामने देख लीजिये, गांधीजीको उनके दुश्मन भी अच्छा ही कहते हैं। अपनी ज़िंदगी, अपनी रहन सहन, अपने चाल चलनकी ख़ूबीसे ही अपने धर्मका प्रचार करना—यह सबसे अच्छा तरीका है। गंधीकी दूकानके लिये इश्तिहार और अड्वरटिजमेंटकी ज़रूरत नहीं ह, उसकी ख़ुशबू ही सबको खींचती है। उमदा मिठाईकी दूकानपर लड़कोको जबरदस्ती नहीं ले जाना पड़ता। हां, दूकानदार ऐसा बेतमीज भी न होना चाहिये कि जो कोई सौदा खरीदने आवे उसको दुत्कार दे। कोई मज़हबवाले एक ग़लती करते हैं, तो कोई दूसरी-जैसा कि सब जानते हैं, हिंदूधर्मवालोंने अपने ऊपर भारी ज़वाल और मुसीबत ख़ास कर दूसरी बड़ी भूलकी वजहसे बुलायी है। सब मज़हबोंको सिर्फ़ अपनी दूकान खुली रखनी चाहिये, और सौदा उमदा रखना चाहिये। अपनी अपनी पसंदके मुताबिक लोग आपही लेने आवेंगे।

मज़हब नहीं इन्सानियत फैलाइये।

यह ख़याल कि हमारा मज़हब फैलने से हमारी क़ौम मज़बूत हो जायगी—यह भी एक बड़ी झूठी माया है। इतिहास तवारीख़के एक एक पन्नेसे मालूम होता है, और आज अपनी आंखोंके सामने दिखाई देता है, कि हिंदू राजा हिंदू राजासे, ईसाई कौमें ईसाई कौमोंसे, मुसलमान राजा और कौमें मुसलमान राजा और कौमोंसे, वैसा ही बल्कि उससे ज्यादा, लड़ते आये और लड़ते जाते हैं जितना दूसरे मज़हब वालोंसे। किसी मज़हब

سچ بولتا ہے- دھوکا نہیں دیتا- دوسروں کا دل سے بھلا چاھتا ہے-
اُسکی شکشا کو سبھی باتوں میں لوگ ماننے لگتے ہیں— پیغمبر محمد
کو اُنکے جان پہچان کے آدمی 'الامین' یعنی وشواس پاتر کہکے پکارتے
تھے— اس سے بڑھکر دوسرا خطاب ہو نہیں سکتا— آج بھی یہی اپنی
آنکھوں کے سامنے دیکھہ لیجئے- گاندھی جی کو اُن کے دشمن بھی
اچھا ہی کہتے ہیں— اپنی زندگی - اپنی رھن سہن - اپنے چال چلن کی
خوبی سے ہی اپنے دھرم کا پرچار کرنا- یہ سب سے اچھا طریقہ ہے—
گندھی کی دوکان کے لئے اشتہار اور ایڈورٹزمینٹ کی ضرورت نہیں ہے-
اُسکی خوشبو ہی سب کو کھینچتی ہے— عمدہ مٹھائی کی دوکان پر
لڑکوں کو زبردستی نہیں لے جانا پڑتا— ہاں دوکاندار ایسا بے تمیز بھی
نہ ہونا چاھئے کہ جو کوئی سودا خریدنے آوے اُسکو دتکار دے— کوئی
مذھب والے ایک غلطی کرتے ہیں تو کوئی دوسری— جیسا کہ سب جانتے
ہیں- کہ ھندو دھرم والوں نے اپنے اوپر بھاری زوال اور مصیبت خاصکر
دوسری بڑی بھول کی وجہ سے بلائی ہے— سب مذھبوں کو صرف اپنی
دوکان کھلی رکھنی چاھئے- اور سودا عمدہ رکھنا چاھئے— اپنی اپنی
پسند کے مطابق لوگ آپ ہی لینے آوینگے •

مذھب نہیں انسانیت پھیلائے-

یہ خیال کہ ہمارا مذھب پھیلنے سے ہماری قوم مضبوط ہو جائیگی-
یہ بھی ایک بڑی جھوٹی مایا ہے— اتہاس - تواریخ کے ایک ایک پنے سے
معلوم ہوتا ہے- اور آج اپنی آنکھوں کے سامنے دکھائی دیتا ہے- کہ ھندو
راجہ ھندو راجہ سے- عیسائی قومیں عیسائی قوموں سے- مسلمان راجہ
اور قومیں مسلمان راجہ اور قوموں سے- ویسا ہی بلکہ اُس سے زیادہ لڑتے
آئے اور لڑتے جاتے ہیں جتنا دوسرے مذھب والوں سے— کسی مذھب

की ऊपरी नुमाइशी दिखौआ रीति रिवाजोंके फैलनेसे कोई कौम मजबूत नहीं होती, बल्कि उस इन्सानियत, मनुष्यता, मेल-मुहब्बत, नेकी के फैलनेसे जो सब मजहबों-धर्मों का सत्तसार है। ये ऊपरी नामरूप तो कपड़े पहिरावेकी सी बात हैं, जिसको जैसा मन भा ओढ़ो छोड़ो। इनमें जबरदस्ती करना बड़ी भूल है, हां, सलाह, मशिवरा, परामर्श, शिक्षा, सभ्यतासे देना जायज है।

ज लोग अपने मजहबकी तबलीग, अपने धर्मका प्रचार, जबानसे भी करना लाजिमी ही समझें वे शाइस्तगीसे, सभ्यतासे, दलील और हिक्मत और युक्तिसे, करैं। अपने मजहबकी खूबियाँ, दिखावें पर दूसरे मजहबकी निंदा न करें। सब मजहबोंमें जो मुश्तरका यानी समान बातें हैं उनका ज्यादा खयाल रक्खें और जो खुसूसियत और विशेष और ऊपरी फरक की रीतियों रस्मोंकी बातें हैं उनकी तरफ थोड़ा कम ध्यान करें। सब आदमी नेकचलन होकर खुदा ईश्वरके प्यारे हो जायँ—इसकी फिक्र ज्यादा रखें। मेरी ऊठक बैठककी ही नकल सब करें—इसकी कम। अगर मुबल्लिग़ और प्रचारक लोग ऐसा अमल करें तो यह सब झगड़े जो आज बरपा हैं दूर हो जायं। हिन्दुस्तानमें दुनियाके सब मजहब मौजूद हैं। अगर यहां मज़हबी मेलका नमूना कायम हो जाय तो सारी दुनियामें इसका असर फले। और प्राय: झगड़ा भी सिर्फ हिन्दुओं और मुसलमानोंमें ही देख पड़ता है। यह झगड़ा तभी दूर होगा जब अपने और दूसरे दोनों मजहबोंकी अस्लियतको पहचानैं, एक दूसरेके गुणोंको, खूबियोंको, ज्यादा देखैं, दोषोंको, नुक़्सों को कम, और एक दूसरेको जो कुछ कहैं सुनैं, समझैं समझावैं, वह शाइस्तगी शिष्टतासे।

ज्यादती हर बातमें बचाना चाहिये। धर्म-मज़हबकी भी। इसमें भी जोश और क्षोभका हमहमा सच्चे धर्म-मजहबके खिलाफ है।

-کی اوپری نمائشی دکھوا ریت رواجوں کے پھیلنے سے کوئی قوم مضبوط نہیں ہوتی- بلکہ اس انسانیت - منشیتا - میل محبت- نیکی کے پھیلنے سے جو سب مذہبوں - دھرموں کا ست سار ہے— یہ اوپری نام روپ تو کپڑے پہناوے کی سی بات ہے- جسکو جیسا من بھاوے اوڑھو چھوڑو— اس میں زبردستی کرنا بڑی بھول ہے- ہاں صلاح - مشورہ - پرامرش شکشا سبھیتا سے دینا جایز ہے *

جو لوگ اپنے مذہب کی تبلیغ - اپنے دھرم کا پرچار - زبان سے بھی کرنا لازمی ہی سمجھیں وہ شائستگی سے - سبھیتا سے - دلیل اور حکمت اور یکتی سے کریں—اپنے مذہب کی خوبیاں دکھاویں- پر دوسرے مذہب کی نندا نہ کریں— سب مذہبوں میں جو مشترکہ یعنی سمان باتیں ہیں اُنکا زیادہ خیال رکھیں اور جو خصوصیت اور وشیش اور اوپری فرق کی ریتوں رسموں کی باتیں ہیں اُنکی طرف تھوڑا کم دھیان کریں— سب آدمی نیک چلن ہوکر خدا ایشور کے پیارے ہوجاویں-اسکی فکر زیادہ رکھیں— میری اٹھک بیٹھک کی ہی نقل سب کریں اِسکی کم—اگر مبلغ اور پرچارک لوگ ایسا عمل کریں تو یہہ سب جھگڑے جو آج برپا ہیں دور ہوجاویں— ہندوستان میں دنیا کے سب مذہب موجود ہیں— اگر یہاں مذہبی میل کا نمونہ قائم ہو جائے تو ساری دنیا میں اسکا اثر پھیلے— اور پرایہ جھگڑا بھی صرف ہندوں اور مسلمانوں میں ہی دیکھہ پڑتا ہے— یہہ جھگڑا تبھی دور ہوگا جب اپنے اور دوسرے دونوں مذہبوں کی اصلیت کو پہچانیں- ایک دوسرے کے گنوں کو- خوبیوں کو- زیادہ دیکھیں- دوشوں کو- نقصوں کوکم- اور ایک دوسرے کو جو کچھہ کہیں سنیں سمجھیں سمجھاویں وہ شائستگی سے- شِشٹتا سے *

زیادتی ہر بات میں بچانا چاھئے— دھرم مذہب کی بھی—اس میں بھی جوش اور کشربھہ کا ھمہہ سچے دھرم مذہب کے خلاف ہے—

कुरानमें कहा है—"ला तअतदू इन्ना अल्लाहा ला योहिब्बुल् मोतदीन्", यानी हद से ज्यादा बढ़नेवालोंसे अल्ला परमात्मा मुहब्बत नहीं करता। यही अर्थ संस्कृतमें भी कहा है,—"आश्रयेन् मध्यमां वृत्तिं अति सर्वत्र वर्जयेत्", यानी बीचका रास्ता पकड़ो और अति किसी काममें मत करो। हर आदमीको मुनासिब है कि अपने मां बाप की, अपने अवतारी मसीह, रसूलकी, इज्जत करे, पर यह मुनासिब नहीं कि कोई किसीसे कहे कि तुम भी मेरे ही मां बापकी इज्जत करो, अपने मां बाप की नहीं। हां, जो सबका अव्वल् मां बाप अल्ला परमात्मा गाड् के नामोंसे और रूह चेतनाके रूपसे हर आदमी के भीतर बठा है उसकी पूजा दिलसे सभी को करना चाहिये।

कौन जिम्मेदार ?

इसकी जिम्मादारी, कि इस तरह पर अमल हो, धर्माचार्यों और मजहबी पेशवाओं पर है। उनको चाहिये कि मुंहदेखी बात न कहें, झूठी बदनामीको न डरें, झूठी नेकनामी और वाहवाही की लालच न करें। अपनी अपनी उम्मतोंको सच्ची सलाह दें। यह न कहें कि अभी लोग तैयार नहीं हैं, जमाना नहीं है। बुद्ध और मूसा, ईसा और मुहम्मद, कबीर और नानक, ने जमानेका इन्तिजार नहीं किया, लोगोंके तैयार हो जानेका आसरा नहीं देखा, बल्कि अपनी रूह, अपने इल्हाम, अपने आवेश,के जोरसे लोगोंको तैयार किया और जमानेको बनाया। और मजहबी पेशवाओं और धर्माचार्योंसे भी एक मानीमें ज्यादा जिम्मादारी जनता यानी अवाम पर है। जब नौकर हाकिम और शाह बन गये, इन्तिजामकी जगह नौकरशाही हो गई, तो प्रजाको ही उसको फिरसे दुरुस्त करनेकी फिक्र करनी पड़ी। प्रजाहीने उन मुन्तजिमोंको मुकर्रर किया था जो अब बिगड़ गये। अब प्रजा ही को उन्हें फिर अपने काबूमें लाना है। इसके लिये प्रजाको अपनी बुजुर्गी पहिचानना चाहिये। तभी नौकर भी उसकी बुजुर्गीको मानेंगे। यही हालत धर्म और मजहब की है। अपनेको

قرآن میں کہا ہے۔ " لا تعتدوان اللہ لا یحب المعتدین"۔ یعنی حد سے زیادہ بڑھنے والوں سے اللہ پرماتما محبت نہیں کرتا— یہی ارتھ سنسکرت میں بھی کہا ہے—" آشرئیں مدھیمام ورتم اتی سروتر ورجیت"۔ یعنی بیچ کا راستہ پکڑو اور اتی کسی کام میں مت کرو— ہر آدمی کو مناسب ہے کہ اپنے ماں باپ کی - اپنے اوتاری مسیح رسول کی - عزت کرے - پر یہ مناسب نہیں کہ کوئی کسی سے کہے کہ تم یہی میرے ہی ماں باپ کی عزت کرو - اپنے ماں باپ کی نہیں— ماں جو سب کا اول ماں باپ اللہ پرماتما گاڈ کے ناموں سے اور روح چیتنا کے روپ سے ہر آدمی کے بھیتر بیٹھا ہے اُسکی پرجا دل سے سبھی کو کرنا چاہئے *

کون ذمہ دار ؟

اِسکی ذمہ داری- کہ اس طرح پر عمل ہو- دھرما چاریوں اور مذہبی پیشواؤں پر ہے— اُنکو چاہئے کہ منہہ دیکھی بات نہ کہیں- جھوٹی بدنامی کو نہ ڈریں- جھوٹی نیکنامی اور واہواھی کی لالچ نہ کریں— اپنی اپنی اُمتوں کو سچی صلاح دیں— یہ نہ کہیں کہ ابھی لوگ تیار نہیں ہیں- زمانہ نہیں ہے— بدھ - موسی - عیسی - اور محمد - کبیر اور نانک نے زمانہ کا انتظار نہیں کیا- لوگوں کے تیار ہو جانے کا آسرا نہیں دیکھا - بلکہ اپنی روح - اپنے الہام - اپنے آویش - کے زور سے لوگوں کو تیار کیا اور زمانہ کو بنایا—اور مذہبی پیشواوں اور دھرماچاریوں سے بھی ایک معنی میں زیادہ ذمہ داری جنتا یعنی عوام پر ہے - جب نوکر حاکم اور شاہ بنگئے- انتظام کی جگہ نوکر شاہی ہوگئی- تو پرجا کوھی اس کو پھر سے درست کرنے کی فکر کرنی پڑی—پرجاھی نے اُن منتظموں کو مقرر کیا تھا جو اب بگڑ گئے — اب پرجا ھی کو انہیں پھر اپنے قابو میں لانا ہے— اسکے لئے پرجا کو اپنی بزرگی پہچاننا چاہئے - تبھی نوکر بھی اُسکی بزرگی کو مانینگے— یہی حالت دھرم اور مذہب کی ہے— اپنے کو

पहिचानिये, अपनी रूहको जानिये, मजहबी स्वराज हासिल कीजिये। और यह बहुत सहज भी है, और निहायत मुश्किल भी है। पच्छि-मसे पूरबकी ओर, बाहर से भीतरकी ओर, आंख फेरनेकी बात है।

इन्सान खुद सब मजहबोंसे बड़ा है।

यहां सभी मजहबोंके मानने वाले मौजूद हैं। हर एकको इख्तियार है कि अपने मजहबको, अपने धर्मको, जब चाहे उतार दे, और जिस दूसरे मजहब-धर्मको चाहे ओढ़ ले, जैसे ही एक कपड़ेको उतार कर दूसरेको पहिन सकता है। इस छोटी सी बातको आप लोग खूब गौर कीजिये। बात सीधी है, प्रत्यक्ष है, आंखके सामने है, इसमें किसी दलीलकी जरूरत ही नहीं। इसकी तरदीद, इसका खण्डन, हो ही नहीं सकता। कैसे हो? रोज हम लोग देखते ही हैं कि कितने ही आदमी एक धर्म छोड़ कर दूसरा धर्म उठा लेते हैं। तबलीग और प्रचारके मानी यही हैं कि लोग एक धर्मको छोड़कर दूसरे धर्मको उठा लें। पर इस बातका असली नतीजा क्या निकलता है उस पर गौर कीजिये। इसका अस्ली नतीजा यही निकलता है कि सब मजहबों और धर्मोंसे आदमी की रूह बड़ी है, वही रूह इन सब मजहबोंके बीचमें तजवीज करती है, कि कौन ज्यादा अच्छा और कौन कम अच्छा, किसको लेना चाहिये किसको छोड़ना चाहिए। सब पोथियां, वेद और जिंद-अवस्ता, इंजील और तौरेत और कुरान, सब मजहबी रहनुमा, अवतार, ऋषि, मुनि, रसूल, पैग़म्बर, मसीह, नबी, सभी आप से दर्खास्त करते हैं कि मुझको मानो, मुझको मानो। आप जिसको चाहते हो मानते हो, नहीं चाहते तो नहीं मानते और अलग हटा देते हो। इससे बढ़के क्या ज्यादा सरीही सबूत चाहिये कि आद-मीकी रूह इन सभों से बड़ी है। इस्लाम में बहत्तर और सनातन धर्ममें बहत्तर सौ फिरके जो पैदा हो गये हैं वे भी, खराबी करते हुए भी, इसी इन्सानी रूह की बुजुर्गी बड़प्पन के सुबूत हैं, कि आदमियों

پہچانئے - اپني روح کو جانئے - مذھبي سوراج حاصل کیجئے— اور یہہ بہت سہج بھی ھے - اور نہایت مشکل بھي ھے— پچھم سے پورب کی اور - باھر سے بھیتر کي اور آنکھہ پھیرنے کي بات ھے *

انسان خود سب مذھبون سے بڑا ھے

یہان سبھي مذھبون کے ماننے والے موجود ھیں— ھر ایک کو اختیار ھے کہ اپنے مذھب کو - اپنے دھرم کو - جب چاھے اُتار دے اور جس دوسرے مذھب-دھرم کو چاھے اوڑھہ لے—جیسے ھي ایک کپڑے کو اُتار کر دوسرے کو پہن سکتا ھے—اس چھوٹي سي بات کو آپ لوگ خوب غور کیجئے—بات سیدھي ھے - پرتکش ھے - آنکھہ کے سامنے ھے - اس میں کسي دلیل کي ضرورت ھي نہیں—اسکي تردید-اسکا کھنڈن-ھوھي نہیں سکتا—کیسے ھو ؟ روز ھم لوگ دیکھتے ھي ھیں کہ کتنے ھي آدمي ایک دھرم چھوڑ کر دوسرا دھرم اُٹھا لیتے ھیں— تبلیغ اور پرچار کے معني یہي ھیں کہ لوگ ایک دھرم چھوڑ کر دوسرے دھرم کو اُٹھا لیں— پر اس بات کا اصلي نتیجہ کیا نکلتا ھے اُسپر غور کیجئے— اسکا اصلي نتیجہ یہي نکلتا ھے کہ سب مذھبون اور دھرمون سے آدمی کي روح بڑي ھے - وھي روح ان سب مذھبون کے بیچ میں تجویز کرتي ھے-کہ کون زیادہ اچھا اور کون کم اچھا-کس کو لینا چاھئے کس کو چھوڑنا چاھئے— سب پوتھیان - وید اور زند اوستا-انجیل اور توریت اور قرآن - سب مذھبی رھنما - اوتار - رشي - منی - رسول - پیغمبر - مسیح - نبی - سبھي آپ سے درخواست کرتے ھیں کہ مجھکو مانو- مجھکو مانو—آپ جسکو چاھتے ھو مانتے ھو- نہیں چاھتے تو نہیں مانتے اور الگ ھٹا دیتے ھو — اس سے بڑھکر کیا زیادہ صریحي ثبوت چاھئے کہ آدمی کي روح ان سبھون سے بڑی ھے— اسلام میں بہتر اور سناتن دھرم میں ٧٢٠٠ فرقے جو پیدا ھوگئے ھیں وہ بھي - خرابي کرتے ھوئے بھي اسي انسانی روح کی بزرگي بڑپن کے ثبوت ھیں- کہ آدمیون

ने ही मनमाना मजहबों की शकल वक्तन् बक्तन् बदल डाला। जैसा सूफियों ने कहा है.

है अपने सीनेमें उससे ज़ायद जो बात वायज किताबमें है।
मसहफि दिल् वों की किताबे बेह अज़ ई नेस्त।
आत्मैव देवताः सर्वाः सर्वमात्मन्यवस्थितम्।

तो इस रूहको ही पकड़ना चाहिये। इसके बलसे हम सबको चाहिये कि अपने अपने मज़हबोंमें, दस्तूरोंमें, राजनीतिमें, जो ख़राबियां आ गई हैं उनको दूर कर दें। यह मत कहिये कि यह तो धर्म मज़हबकी बात है, इसमें बोलनेका काम नहीं। जब आपकी रूहको, आपके "स्व" को, यह ताकत है कि एक मजहबको बिलकुल छोड़ दे और दूसरेको बिलकुल ओढ़ ले, तो क्या यह ताकत नहीं है कि मौजूदा मजहबको जरूरतके मुताबिक घटा बढ़ाकर दुरुस्त कर ले? और बिना ऐसा घटाये बढ़ाये फिर्के और सम्प्रदाय बने कैसे? यही सब ताकत रखनेवाली रूह असली "स्व" है। हदीसमें इसीलिये कहा है कि जिसने अपनेको पहिचाना उसने खुदाको पहिचाना—"मन् अरफ़ा नफ़्सहू फ़कद् अरफ़ा रब्बहू"। जब इस रूहको, जो खुदाका नूर है, हम लोग पहिचानेंगे तभी मजहबी झगड़े मिटेंगे और मज़हबी स्वराज मिलेगा। और तभी राजनीतिक, सियासती, सच्चे स्व-राजकी भी शकल हम पहिचानेंगे, और तभी वह स्वराज भी हमको मिलेगा। बिना इस सच्चे "स्व" को, अपनेको, फिरसे पहिचाने, हिन्दुस्तानी कौममें बुजुर्गी वापस नहीं आवेगी। एक महात्मा गांधी, एक हकीम अजमलखां, एक लाला लाजपतराय और एक मौलाना मुहम्मद अली, एक पण्डित मोतीलालजी और एक मौलाना शौकत-अली, एक श्रीयुत चित्तरंजनदास और एक डाक्टर अंसारी,

نے ہی میں مانا مذہبوں کی شکل وقتا فوقتا بدل ڈالے— جیسا سوامی نے کہا ہے *

ہے اپنے سینہ میں اُس سے زائد
جو بات واعظ کتاب میں ہے—

مصنف دل ہیں کہ کتاب بہ ازین نیست

ٹو آتمیو دیوتاہ سروا سرو ماتمنیوستھتم—

تو اس روح کو ہی پکڑنا چاہئے— اس کے بل سے ہم سب کو چاہئے کہ اپنے اپنے مذہبوں میں- دستوروں میں- راج نیتی میں- جو خرابیاں آگئی ہیں اُن کو دور کر دیں— یہ مت کہئے کہ یہ تو دھرم مذہب کی بات ہے- اس میں بولنے کا کام نہیں— جیسے آپ کی روح کو-آپ کے "سو" کو- یہ طاقت ہے کہ ایک مذہب کو بالکل چھوڑ دے اور دوسرے کو بالکل اوڑھ لے- تو کیا یہ طاقت نہیں ہے کہ موجودہ مذہب کو ضرورت کے مطابق گھٹا بڑھا کر درست کر لے؟ اور بنا ایسا گھٹائے بڑھائے ترقے اور سدھارے بنے کیسے؟ یہی سب طاقت رکھنے والی روح اصلی "سو" ہے— حدیث میں اسی لئے کہا ہے کہ جس نے اپنے کو پہچانا اُس نے خدا کو پہچانا— "من عرف نفسہ فقد عرف ربہ"— جب اس روح کو- جو خدا کا نور ہے- ہم لوگ پہچانینگے تبھی مذہبی جھگڑے مٹینگے— اور مذہبی سوراج ملیگا— اور تبھی راج نیتک - سیاستی - سچے سوراج کو بھی ٹھیک ہم پہچانینگے- اور تبھی وہ سوراج بھی ہمکو ملیگا— بنا اس سچے "سو" کو- اپنے کو- پھر سے پہچانے- ہندوستانی قوم میں بزرگی واپس نہیں آویگی— ایک مہاتما گاندھی - ایک حکیم اجمل خاں - ایک لالہ لاجپت راے اور ایک مولانا محمد علی - ایک پنڈت موتی لال جی اور ایک مولانا شوکت علی - ایک شری یت چترنجن داس اور ایک ڈاکٹر انصاری -

एक शंकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ और एक मौलाना अबुल्कलाम आजादसे, इस बत्तीस करोरके जत्थेका काम नहीं चलेगा। इस भारी गरोहमें सच्ची रूह डालनेके लिये, चन्दरोजा जोशाजोशी पैदा करनेके लिये नहीं, बल्कि सच्ची रूहानियत पैदा करनेके लिये, हर एक जिले और हर एक शहर और कस्बेमें हमको ऐसे आदमी चाहियें जो महात्माजीके ठीक ऐसे नहीं तो उनके करीब तो होवें। और ऐसे बुजुर्ग तभी होंगे जब सब मजहबोंके असली मुश्तरका उसूलोंकी, अर्थात् समान सिद्धान्तोंकी, तरफ सबका ध्यान दिलाया जायगा। कुरानमें कहा है "कुल तआलौ एला कलेमतिन् सवाइम् बैनना व बैनकुम्"–सब लोग उस एक बातकी तरफ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान् एक है। वेदमें कहा है "संगच्छध्वम् संवदध्वम् सं वो मनांसि जानताम्"–सब लोग साथ साथ चलो, एक राय होकर बोलो, एक बात समझो। सच्चे "स्व" को पहिचानो। यही सबसे ज्यादा जरूरी और पुरअसर अर्थात् प्रभाव शाली उपाय हैं जिससे सच्चा और मजबूत स्वराज हासिल होगा और कायम रहेगा।

॥ ॐ आमीं-एमेन् ॥



माधव विष्णु पराड़कर द्वारा, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशीमें मुद्रित।

ایک شنکراچارج بھارتی کرشن تیرتھہ اور ایک مولانا ابوالکلام آزاد سے۔ اس بتیس کرور کے جتھے کا کام نہیں چلیگا— اس بھاری گروہ میں سچی روح ڈالنے کے لئے- چند روزہ جوشاجوشی پیدا کرنے کے لئے نہیں- بلکہ سچی روحانیت پیدا کرنے کے لئے- ہر ایک ضلع اور ہر ایک شہر اور قصبہ میں ہم کو ایسے آدمی چاہئیں جو مہاتما جی کے ٹھیک ایسے نہیں تو اُن کے قریب تو ہوویں— اور ایسے بزرگ تبھی ہونگے جب سب مذہبوں کے اصلی مشترکہ اُصولوں کی- ارتھات سمان سدھانتوں کی طرف سب کا دھیان دلایا جاویگا— قرآن میں کہا ہے-" قل تعالوا إلی کلمۃ سواء بیننا و بینکم"- سب لوگ اُس ایک بات کی طرف آو جو ہمارے اور تمہارے درمیان ایک ہے— وید میں کہا ہے—

سنگچھدھوم سم وددھوم سم و منانسی جانتام-

سب لوگ ساتھہ ساتھہ چلو- ایک رائے ہوکر بولو- ایک بات سمجھو— سچے "سو" کو پہچانو— یہی سب سے زیادہ ضروری اور پر اثر ارتھات پربھاوشالی اُپائے ہے جس سے سچا اور مضبوط سوراج حاصل ہوگا اور قایم رهیگا *

* اوم- آمین- ایمین *

माधव विष्णु पराड़करने ज्ञानमण्डल यंत्रालय, काशीमें मुद्रितकर
ज्ञानमण्डल कार्यालयके लिये प्रकाशित किया ।